

BRIEF NEWS

सदर अस्पताल में लगी आग, मची अफरा-तफरी



LATEHAR : सदर अस्पताल के ममता वाहन सेल में मंगलवार को शॉर्ट सर्किट से आग लग गयी। हालांकि समय रहते अस्पताल कर्मियों ने तत्परता दिखाते हुए आग पर काबू पा लिया। मिली जानकारी के अनुसार सदर अस्पताल में मंगलवार को ममता वाहन सेल में पहुंच कर कॉल सेंटर कर्मी ने पंखा चालू किया। इसी दौरान अचानक शॉर्ट सर्किट हुई और पंखा में आग लग गई। पंखा में आग लगता देख लोग डर गए। परंतु अस्पताल कर्मियों ने हिम्मत दिखाते हुए आग पर तत्काल काबू पा लिया। इस संबंध में लातेहार सिविल सर्जन डॉक्टर राजमोहन खलखो ने बताया कि अस्पताल के कॉल सेंटर में आग लगने की सूचना मिली थी। परंतु आग से कोई नुकसान नहीं हुआ है आग पर काबू पा लिया गया है।

डिमना के विस्थापितों ने दी उग्र आंदोलन की चेतावनी



JAMSHEDPUR : पूर्वी सिंहभूम जिला के मिर्जाडीह बांध से विस्थापित सैकड़ों ग्रामीणों ने हाथ में तख्तियां और पोस्टर लेकर मंगलवार को डिमना क्षेत्र से पैदल मार्च करते हुए जिला उपायुक्त कार्यालय में जोरदार प्रदर्शन किया। मिर्जाडीह बांध विस्थापित और रैयत संघर्ष मोर्चा के बैनर तले 21 गांवों के ग्राम प्रधान, मुखिया और अन्य ग्रामीण पारंपरिक हथियार लेकर डिमना चौक से जिला मुख्यालय पहुंचे और नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने उपायुक्त को पांच सूत्री मांग पत्र सौंपते हुए मिर्जाडीह रैयतों के घर तोड़ने वालों की तुरंत गिरफ्तारी की मांग की। उन्होंने सभी गांवों में सड़क निर्माण कराने, विस्थापितों को विस्थापन प्रमाण पत्र देने और टाटा लीज नवीकरण समिति में विस्थापित प्रतिनिधि को शामिल करने की भी मांग की। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि राजकीय शोक के दौरान टाटा कंपनी और जिला प्रशासन की मिलीभगत से रैयतों के घर तोड़े गए, इससे यह प्रतीत होता है कि राज्य सरकार और जिला प्रशासन टाटा कंपनी के इशारों पर काम कर रही है। ग्रामीणों ने कहा कि लगातार मूलवासियों का दमन किया जा रहा है और उन्हें न्याय नहीं मिल रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि 30 दिनों के भीतर उनकी मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई नहीं होती है, तो आंदोलन को और उग्र रूप दिया जाएगा।

लातेहार को मिला राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस में गोल्ड



LATEHAR : लातेहार जिला प्रशासन को शिक्षा के क्षेत्र में अभिनव पहल संपूर्ण शिक्षा कवच कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार विशाखापट्टनम में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया, जहां लातेहार जिले को गोल्ड अवार्ड से सम्मानित किया गया। संपूर्ण शिक्षा कवच कार्यक्रम जिला प्रशासन लातेहार की एक अभिनव पहल है, जिसके माध्यम से शिक्षा व्यवस्था को डिजिटल नवाचार, पारदर्शिता एवं सुदृढ़ प्रबंधन से जोड़ते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय प्रबंधन, अध्यापक उत्पत्ति, छात्र उपस्थिति, आधार आधारित मॉनिटरिंग, तथा रियल टाइम डेटा एनालिटिक्स जैसी व्यवस्थाओं को लागू किया गया है। इस उपलब्धि पर उपायुक्त उक्तर्ष गुप्ता ने कहा कि यह सम्मान पूरे लातेहार जिले की टीम, शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं समुदाय की साझी मेहनत का परिणाम है। हमारा लक्ष्य है कि जिला के हर बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और यह पहल राष्ट्रीय स्तर पर अन्य जिलों के लिए भी एक मॉडल के रूप में कार्य करे। जिला प्रशासन लातेहार इस उपलब्धि को जिले की जनता को समर्पित करता है और आगे भी शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।

जुबिली पार्क में झाल-मुढ़ी बेचने वालों पर जुस्को कर्मियों की गुंडागर्दी, भाजपा का हल्लाबोल

PHOTON NEWS JSR :

भाजपा, जमशेदपुर महानगर के अध्यक्ष सुधांशु ओझा ने कहा कि जुबिली पार्क में झाल-मुढ़ी बेचने वाले के साथ टाटा स्टील यूआईएसएल कर्मियों (पूर्व में जुस्को) की दबंगई और मारपीट का सिलसिला जारी है। पिछले दिनों झालमुढ़ी और चाय बेचकर आजीविका चलाने वालों के साथ जुस्को की एसआरटी द्वारा मारपीट व महिलाओं से भी अभद्रता की गई थी। इसी कड़ी में, मंगलवार को उनके नेतृत्व में भाजपा पदाधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया और पूरे मामले की गंभीरता से समझी की। भाजपा नेताओं ने घटनास्थल से ही जुस्को के वरिष्ठ पदाधिकारियों से फोन पर वार्ता कर सख्त शब्दों में चेतावनी दी कि यदि अगरीबों को जुबिली पार्क में रोजी-रोटी कमाने से रोका गया तो जोरदार आंदोलन किया जाएगा। इसके

आंदोलन की दी चेतावनी



जुबिली पार्क में झाल-मुढ़ी विक्रेताओं का सामान लिए भाजपा कार्यकर्ता

साथ ही दोषी सुरक्षा कर्मियों पर तत्काल कठोर कार्रवाई की मांग की गई। सुधांशु ओझा ने कहा कि तीन दशकों से रोजगार के रूप में झाल-मुढ़ी बेच रहे लोगों को इससे रोकना किसी भी स्तर में उचित नहीं है। गरीबों की आजीविका पर कुठाराघात और उन पर लाठीचार्ज बरसाना किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं होगा। उन्होंने टाटा स्टील की सहयोगी कंपनी टाटा स्टील यूआईएसएल की

को टक्कर मार दी। संयोगवश कार में बैठी अधिकारी की पत्नी, ड्राइवर व अन्य लोग बाल-बाल बच गए। हादसे के बाद ट्रैक्टर चालक वाहन सहित लेकर फरार हो गया। दूसरी ओर, इस दुर्घटना की खबर मिलते ही पुलिस व प्रशासन में खलबली मच गई। कुछ ही देर बाद विभागीय अधिकारियों के निर्देश पर माइनिंग इंस्पेक्टर व जामताड़ा टाउन थाने की पुलिस ने अवैध बालू लंदे ट्रैक्टर और इसके ड्राइवर की तलाश शुरू कर दी। शाम ढलने से पहले ही पुलिस व माइनिंग अधिकारी की टीम ने बालू लंदे ट्रैक्टर को खोज निकाला और पुलिस उसे हिरासत में लेकर जामताड़ा टाउन थाना ले आई। इस बीच ट्रैक्टर का ड्राइवर फरार हो



याने में लाया गया बालू लंदे ट्रैक्टर

गया था। जिले के एक बड़े अधिकारी की बताया जाता है कि इस कार से पत्नी घनबाद जा रही थी। जैसे ही

बालू लंदे ट्रैक्टर ने कार को मारी टक्कर बाल-बाल बच गई ऑफिसर की पत्नी

मंगलवार को दोपहर 12 बजे जामताड़ा से धनबाद जाने के दौरान धोबना मोड़ के आगे हुई घटना

- जिले के एक प्रशासनिक अधिकारी की पत्नी को ड्राइवर पहुंचाने जा रहा था घनबाद
- टाउन थाने की पुलिस व माइनिंग की टीम ने ट्रैक्टर को पकड़ा, चालक फिर हो गया फरार

PHOTON NEWS JAMTARA : एनजीटी की पाबंदी के बावजूद पूरे राज्य समेत जामताड़ा में भी अवैध तरीके से बालू का कारोबार चल रहा है। इसी कड़ी में मंगलवार को बालू लंदे तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने जिले के एक अधिकारी की कार

को टक्कर मार दी। संयोगवश कार में बैठी अधिकारी की पत्नी, ड्राइवर व अन्य लोग बाल-बाल बच गए। हादसे के बाद ट्रैक्टर चालक वाहन सहित लेकर फरार हो गया। दूसरी ओर, इस दुर्घटना की खबर मिलते ही पुलिस व प्रशासन में खलबली मच गई। कुछ ही देर बाद विभागीय अधिकारियों के निर्देश पर माइनिंग इंस्पेक्टर व जामताड़ा टाउन थाने की पुलिस ने अवैध बालू लंदे ट्रैक्टर और इसके ड्राइवर की तलाश शुरू कर दी। शाम ढलने से पहले ही पुलिस व माइनिंग अधिकारी की टीम ने बालू लंदे ट्रैक्टर को खोज निकाला और पुलिस उसे हिरासत में लेकर जामताड़ा टाउन थाना ले आई। इस बीच ट्रैक्टर का ड्राइवर फरार हो

धड़ल्ले से हो रहा बालू का उत्खनन व परिवहन

मंगलवार को हुई घटना ने भले ही अधिकारिक तौर पर बालू तस्करी पर मुहर लगाई हो, लेकिन सच तो यह है कि बालू तस्करी एनजीटी की पाबंदियों के बावजूद कभी बंद ही नहीं हुआ। जिले भर दर्जनों नदी घाटों से रोजाना सैकड़ों ट्रैक्टर से बालू की तस्करी धड़ल्ले से हो रही है। बालू के इस अवैध कारोबार को रोकने की चर्चा सिर्फ महीने में एक बार होने वाली टास्क फोर्स की बैठक में ही होती है। अधिकतर कार्रवाई में इक्का-दुक्का वाहन चालक ही पकड़े जाते हैं। जब्त किए गए बालू का भी हिसाब नहीं मिलता।

कार चेंगायडीह के रास्ते धोबना मोड़ से आगे पहुंची, सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने कार को टक्कर मारी। लेकिन अधिकारी की कार चला रहे ड्राइवर की सुझ-बुझ से बड़ा हादसा होने से टल गया और दोनों गाड़ियाँ उस वक्त वहां से निकल गईं। लेकिन

गिरिडीह में पकड़ाया सेक्स रैकेट किराए के घर में चल रहा था धंधा

GIRIDIH : गिरिडीह के मुफरसिल थाना क्षेत्र में सेक्स रैकेट पकड़ाया है, जो किराए के घर में चल रहा था। सिहोडीह के एक घर में लड़कियों को बुलाकर देह व्यापार कराया जा रहा था। गुप्त सूचना पर पुलिस ने सोमवार की देर रात छापेमारी की, तो कमरे की तलाशी के दौरान आपत्तिजनक हालत में युवक-युवती के साथ दो महिलाएं भी मिलीं। पुलिस ने मौके से दो महिलाओं और दो युवतियों को हिरासत में लिया। पुलिस को वहां से कई आपत्तिजनक सामान और नशीले पदार्थ भी मिले, जिसे जब्त कर लिया गया। बताया जाता है कि जिस घर में ये धंधा चल रहा था, वह लोदा निवासी टेकलाल मिश्र के पास है। घर में तीन प्लेट हैं, जिसमें से दो में परिकार रहते हैं। एक प्लेट में देह व्यापार संचालित करने वाला लगभग एक

एसिड से जला था राजद नेता का शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया रिम्स

पाटन थाना क्षेत्र के उताकी गांव में घर के पास सोमवार को खेत में मिला था शव

AGENCY PALAMU : राष्ट्रीय जनता दल (राजद) (पिछड़ा प्रकोष्ठ) के जिला अध्यक्ष जयशंकर ठाकुर के शव का पोस्टमॉर्टम मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (एमएमसीएच) में मंगलवार को नहीं हो पाया। केमिकल से शव के जले होने और अंदरूनी चोट होने के कारण मेडिकल बोर्ड ने पोस्टमॉर्टम करने से इनकार कर दिया और शव को रांची स्थित राजेन्द्र आर्युविज्ञान संस्थान (रिम्स) भेज दिया। दरअसल, सोमवार को जिले के पाटन थाना क्षेत्र के उताकी गांव में घर से कुछ दूर खेत में जयशंकर ठाकुर का शव मिला था। उनके शरीर के कई हिस्से जले हुये थे। परिजन हत्या का आरोप लगा



मेदिनीनगर मेडिकल कॉलेज में जुटे परिजन व अन्य

रहे हैं। पाटन पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सोमवार को ही एमएमएमसीएच में भेज दिया था, लेकिन मेडिकल बोर्ड गठित नहीं होने के कारण पोस्टमॉर्टम नहीं हो पाया। मंगलवार को मेडिकल बोर्ड में शामिल डॉक्टरों ने शव की जांच की। केमिकल से शरीर का कुछ

हिस्सा जला हुआ पाया गया। अंदरूनी चोट भी नजर आयी। ऐसे में डॉक्टरों ने पोस्टमॉर्टम के लिए शव को रिम्स रेफर दिया। इधर, पाटन थाना प्रभारी के वज्रपात से मौत वाली बयान पर राष्ट्रीय जनता दल के नेताओं और नाई समाज के लोगों ने कड़ी आपत्ति दर्ज की है।

माह से ही रह रहा था। स्थानीय लोगों ने बताया कि वहां पुरुषों का आना-जाना लगा रहता था। पड़ोस के कुछ लोगों ने जानकारी के लिए पूछा भी तो घर में रहने वाले युवक ने खुद को ड्राइवर बताया। सोमवार शाम को भी दो लोग घर में घुसे थे, लेकिन लोगों को देखते ही भागने लगे। पहले से घात लगाए पड़ोसियों ने इनमें से एक व्यक्ति को पकड़ लिया, जबकि दूसरा भाग गया। पड़ोसियों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलने पर मुफरसिल थाना की पुलिस पहुंची। महिला पुलिसकर्मियों के साथ दरवाजा खोलने का प्रयास किया गया। काफी देर के बाद दरवाजा खोला गया। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है और रैकेट के पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है।

पत्नी ने नहीं खोला दरवाजा तो पति ने कर ली खुदकुशी

AGENCY PALAMU : जिले के सतबरवा थाना क्षेत्र के दुलसुलमा पंचायत के हुडमुड गांव में एक युवक का शव पेड़ पर मंगलवार को फंदे से लटका बरामद किया गया। युवक की पहचान सुरेंद्र सिंह उर्फ बडकु सिंह (28) के रूप में हुई है। पुलिस को सूचना मिलने पर सतबरवा थाना के एएसआई अमित उपाध्याय पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। शव घर से कुछ दूर पहाड़ीनुमा टीले पर स्थित बैर के पेड़ पर लटका बरामद किया गया। ग्रामीणों की मदद से शव को नीचे उतारा गया। पंचनामा के बाद शव को पोस्टमॉर्टम के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया। मंगलवार दोपहर शव को पोस्टमॉर्टम किया गया। जानकारी के अनुसार सुरेंद्र



घटनास्थल पर जुटी ग्रामीणों की भीड़

मजदूरी करता था। वह देर रात घर पहुंचा था। उसे शराब की लत भी थी। सोमवार की देर रात घर पहुंचने पर उसने दरवाजा खुलवाने की कोशिश की, मगर पत्नी ने घर का दरवाजा नहीं खोला। इसके बाद ही उसने घर के पास पेड़ पर फंदे से लटक कर खुदकुशी कर ली। सुबह उसका शव पेड़ पर लटका मिला। मृतक के पीछे पत्नी और एक साल का बच्चा है। घटना के वक्त आसपास

के लोगों ने कुछ आवाजें सुनी थीं, लेकिन पहाड़ी इलाका और जंगली जानवरों के डर से कोई बाहर नहीं निकला। घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंचे। दुलसुलमा के पंचायत समिति सदस्य जगदीश सिंह, मुखिया ब्रह्मदेव सिंह, अशोक मिश्री के अलावे बड़ी संख्या में ग्रामीण खुदकुशी की खबर सुनने के बाद घटनास्थल पर पहुंचे।



वार्ता के दौरान जुटे ग्रामीण

वार्ता विफल, उग्र ग्रामीणों ने यूसिल प्रबंधन को दी चेतावनी

PHOTON NEWS GHATSILA : पूर्वी सिंहभूम जिले में जादूगोड़ा के सभा कक्ष में मंगलवार को भी ग्राम सभा तालसा और यूसिल प्रबंधन की वार्ता बेनतीजा रही। वार्ता में ग्राम सभा के सदस्यों ने प्रबंधन के समक्ष जो मांगें रखीं, उसमें विस्थापित परिवार के बेरोजगार सदस्यों को यूसिल में नौकरी देने, जिनकी जमीन अधिग्रहित की गई, उन्हें समुचित

तरीके से पुनर्वास करने, टेलिंग पॉन्ड से सटे 50 मीटर के दायरे में रह रहे परिवारों को भी पुनर्वासित करने, विस्थापित सदस्य जो यूसिल में नौकरी कर रिटायर हुए हैं, उनके आश्रितों को नौकरी देने, नौकरी की अवधि में मृत कर्मचारियों के आश्रितों को अविलंब नौकरी देने, यूसीएल तुरामडीह व बान्द्रुडुंग माईस में विस्थापित प्रभावित बेरोजगार

धरना-प्रदर्शन कलकत्ता उच्च न्यायालय ने बोनस वार्ता पर लगा दी रोक, मजदूर हुए परेशान

कोयला श्रमिकों को नहीं मिला बोनस, यूनियनों का आंदोलन शुरू

PHOTON NEWS DHANBAD : कोयला मजदूरों का बोनस कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेश से लटक गया है। कोर्ट ने बोनस वार्ता तक पर रोक लगा दिया है, जिसके बाद तमाम यूनियनों ने आंदोलन शुरू कर दिया है। प्रमुख चारों यूनियन ने प्रबंधन के खिलाफ एक साथ मोर्चा खोल दिया है। इंटक को बैठक में शामिल करने की मांग के बाद अगले आदेश तक बैठक भी स्थगित कर दी गई है। कोल इंडिया मुख्यालय से सोमवार को देर रात इस आशय का पत्र जारी किया गया है। बीएमएस, एचएमएस, सीटू व एटक ने भी अपने अपने स्तर से कोलियरी कार्यालय पर बोनस के नवी में अग्रिम भुगतान की मांग को लेकर आंदोलन पर उतर गए हैं। इधर इंटक भी श्रमिक हित में कोल इंडिया प्रबंधन को निर्णय



ईसीएल की राजमहल परियोजना कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करते श्रमिक यूनियन के नेता

कोल इंडिया का प्रबंधन कर रहा विचार
कोल इंडिया प्रबंधन की सारे मुद्दों को लेकर विचार कर रहा है। कोयला मंत्रालय से इस पर विमर्श किया गया है। कोल इंडिया के चेयरमैन पीएम प्रसाद की अध्यक्षता में होने वाली बैठक में इस पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा कि अग्रिम भुगतान किया जाए या और कोई रास्ता निकाला जाए।

तत्काल मिले एक-एक लाख रुपये
मजदूर यूनियनों की मांग है कि दुर्गा पूजा से पहले कोल इंडिया मजदूरों को तत्काल एक-एक लाख रुपये का अग्रिम भुगतान करे। बोनस का निर्णय बाद में होगा। कोयला मजदूरों का साथ कोई साजिश नहीं चलेगी। जल्द से जल्द बोनस का फैसला करना होगा।

लेने की बात कही है। बीएमएस ने कोल इंडिया को लिखे पत्र में अखिल भारतीय खदान मजदूर संघ के महामंत्री सुजीत सिंह ने कोल इंडिया

इंटक को बैठक में शामिल करने पर आपत्ति नहीं: बीएमएस
बीएमएस के नेता हरिद्वार सिंह ने कहा कि कलकत्ता हाई कोर्ट के फैसले के मुताबिक इंटक को मानकीकरण समिति में शामिल करना था, लेकिन सरकार एवं बीएमएस के दबाव में प्रबंधन डबल बेंच में चला गया। हाई कोर्ट ने सिंगल बेंच के फैसले को बरकरार रखा और मानकीकरण समिति की बैठक को कोर्ट ने अगले फैसले तक स्थगित कर दिया है, जिसके कारण कोयला मजदूर दुर्गा पूजा बोनस से वंचित रह गए। हमें इसका दुख है। हम कोशिश कर रहे हैं कि किसी न किसी रूप में त्योहार के पूर्व मजदूरों को पैसा पहुंचे और मजदूर त्योहार मना सकें। किसी सेंट्रिय यूनियन के शामिल होने या नहीं होने से किसी को क्या फर्क पड़ता है। मजदूरों का हित सबका नश्य है।

BRIEF NEWS

साल भर चलेगा आरएसएस का शताब्दी उत्सव, रांची में भी होंगे कई कार्यक्रम
RANCHI : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का उत्सव नवरात्रि से शुरू हो गया है। संघ का यह शताब्दी उत्सव साल भर तक चलेगा। इस अवसर पर झारखंड में भी कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। यह जानकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रांची महानगर प्रचार प्रमुख सिन्धु रंजन ने दी। रांची महानगर प्रचार प्रमुख ने बताया कि झारखंड में 2111 (दो हजार एक सौ ग्यारह) स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित होंगे। रांची महानगर में 159 स्थानों पर उत्सव मनाया जाएगा। संघ ने झारखंड के सभी मंडलों और बस्तियों में शताब्दी समारोह उत्सव मनाने का निर्णय लिया गया है। इस दौरान स्वयंसेवक घर-घर जाकर लोगों को संघ के कार्यों और उद्देश्यों के बारे में बताएंगे। 100 वर्ष पूरा होने पर विभिन्न गोष्ठियों, कार्यक्रमों के माध्यम से छोटी-छोटी बस्तियों तक संघ पहुंचेगा।

आउटसोर्स कर्मियों को निगम करे नियमित नहीं तो आंदोलन : अजय रांची
RANCHI : झारखंड ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के अधीन कार्यरत सात हजार से अधिक आउटसोर्सिंग कर्मियों के वेतन और बोनस भुगतान करने और नियमितकरण करने की मांग पर आक्रोशित झारखंड ऊर्जा विकास श्रमिक संघ ने निगम प्रबंधन को चेतावनी दी है। संघ के अध्यक्ष अजय राय ने मंगलवार को प्रेस विज्ञापित जारी कर कहा कि यदि जल्द कर्मियों को बोनस भुगतान, बकाया वेतन निपटान और नियमितकरण की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाया गया तो पूरे राज्य में बिजली ब्लैकआउट आंदोलन करेंगे। राय ने कहा कि आउटसोर्सिंग कर्मियों को निकायों की रीढ़ की हड्डी हैं जो सालोंभर बगैर अवकाश लिए हर दिन काम करते हैं। इसके बावजूद उन्हें न तो समय पर वेतन मिल रहा है और न ही बोनस का भुगतान किया जा रहा है।

वज्रपात की चपेट में आकर गाय की मौत मुआवजा का आश्वासन
BERO : प्रखंड की नेहालु पंचायत अंतर्गत दुमरीटोंका टोली गांव में मंगलवार की दोपहर वज्रपात की चपेट में आकर एक गर्भवती गाय की मौत हो गई। मृत गाय दुमरीटोंका टोली गांव निवासी तिलु उरांव की थी। जानकारी के अनुसार, घटना के समय गाय को घर के पास बांस की झाड़ी के नीचे रस्सी से बांधकर रखा गया था। इसी दौरान बारिश शुरू हुई और अचानक जोरदार बिजली काड़की और उसके प्रभाव से गाय की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पंचायत मुखिया वीरेंद्र भगत और उपमुखिया जितिया उरांव घटनास्थल पहुंचे। उन्होंने पीड़ित किसान को ढाढस बंधाते हुए उचित मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया।

जीएसटी कट से लोगों को मिल रही राहत, दुकानदार परेशान

PHOTON NEWS RANCHI : केंद्र सरकार ने जीएसटी की दरें कट कर दी हैं। ऐसे में लोगों को डिस्काउंट मिलने की उम्मीदें हैं। दवा पर कुछ जगहों पर लोगों को डिस्काउंट मिल रहा है। वहीं कार कम्पनियों खरीदारी पर बंपर डिस्काउंट दे रही हैं। दुकानों पर ही ग्राहकों को इसका लाभ मिल रहा। लेकिन, कई दुकानों पर पुराने रेट पर ही समान बेचे जा रहे हैं। इससे ग्राहकों के बीच कंप्यूजन की स्थिति बनी रही। ग्राहकों ने जीएसटी की दरें कम होने का हवाला दिया तो जवाब मिला कि अभी उनके पास जो सामान है वह पुरानी जीएसटी रेट की दरों का है। गोसरी दुकानदार भी थोड़े परेशान हैं। हालांकि कई दुकानदारों ने बीच का रास्ता निकाला है। इससे थोड़ा नुकसान उन्हें उठाना पड़ रहा है।



पुराने स्टॉक का हवाला दे रहे कई दुकानदार, सता रहा नुकसान का डर

1 लाख की हुई बचत
सुमित कुमार ने पिछले महीने कार की बुकिंग कराई थी। इसके बाद उन्होंने कुछ दिन के लिए डिलीवरी का टाल दिया। अब 22 सितंबर को जब उन्होंने बिलिंग के लिए एस्टीमेट लिया तो कार की ऑन रोड प्राइस 1 लाख रुपये तक कम हो गई। जिससे साफ है कि जीएसटी रेट कट का फायदा लोगों को मिलने लगा है। उन्होंने बताया कि टैक्स कट का बड़ा फायदा मिला।

महीने भर की दवा में बच गए 250 रुपये
ऐसे ही बलराम चौरसिया अपने रिलेटिव की दवा हर महीने खरीदते हैं। इस बार उतने दवा खरीदने के लिए 1724 भुगतान किया। जबकि पिछले महीने उतनी दवा ही खरीदने के लिए 1974 रुपये चुकाने पड़े थे। उन्होंने बताया कि टैक्स कट का फायदा तो मिला है। ये आम आदमी के लिए बड़ी राहत है।

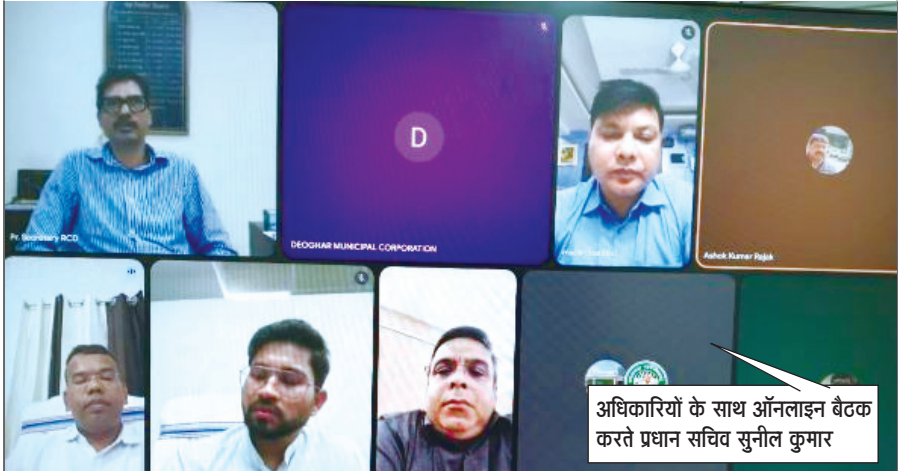
दूध, पनीर व घी हुए सस्ते
हरमू में गोसरी दुकानदार कमलेश ने बताया कि डेयरी प्रोडक्ट तो सस्ता हुआ है। अमूल घी का रेट 1 किलो का 685 रुपये से घटकर 645 रुपये हो गया। वहीं 200 ग्राम पनीर का रेट 99 रुपये से घटकर 95 रुपये हो गया। एक दुकानदार मंजीत ने बताया कि दूध के दाम 61 रुपये लीटर से घटकर 58 रुपये हो गया है। ड्राई फ्रूट भी सस्ता हुआ है। साबुन की कीमतें भी कम हुई हैं। अब कंपनी की जो बिलिंग होगी उसके आधार पर ही तय रेट से बिक्री होगी।

निकाला जाएगा बीव का रास्ता
कोकर के दुकानदार कोशल ने बताया कि हमारा स्टॉक कुछ बचा हुआ है। ऐसे में घटे हुए रेट पर सामान बेचने से नुकसान होगा। कंपनी से भी बात की जा रही है। बीव का रास्ता निकाला जाएगा। फिलहाल तो एप टैक्स कट पर सामान बेचने से कुछ नुकसान हो रहा है। जल्द ही सब ठीक होने की उम्मीद है। ग्राहक अब जागरूक हो गए हैं।

प्रधान सचिव ने नगर निकाय व पथ निर्माण विभाग को तालमेल के साथ काम करने का दिया निर्देश

तत्काल सड़कों को करें दुरुस्त कहीं न दिखे कचरा : सुनील कुमार

PHOTON NEWS RANCHI : त्योहारों के मद्देनजर राज्य सरकार ने शहरी व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए कर्म कस ली है। नगर विकास विभाग और पथ निर्माण विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार ने सभी नगर निकायों और पथ निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ ऑनलाइन बैठक की। उन्होंने विभागों से आपसी तालमेल के साथ कार्य करते हुए सभी सड़कों को त्योहारों से पूर्व दुरुस्त करने का निर्देश दिया है। प्रधान सचिव ने कहा कि श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो, यह सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि सभी सड़कों को मोटेरेबल बनाया जाए और विशेष रूप से पूजा पंडालों तक जाने वाले मार्गों को सुधारने पर बल दिया जाए। इसके लिए 250 करोड़ रुपये गैर-योजना मद से कार्यपालक अभियंताओं को उपलब्ध कराए गए हैं, जिनसे राज्य भर में कोल्ड बिटुमिन से मरम्मत कार्य किया जाएगा। ऑनलाइन बैठक में सुडा निदेशक सूरज कुमार और रांची नगर निगम के प्रशासक सुशांत गौरव भी शामिल थे।



गैर योजना मद से विभाग को दिए गए हैं 250 करोड़ रुपये
त्योहारों में श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो, यह सरकार की प्राथमिकता

स्मार्ट सिटी के लिए नई जमीन की तलाश
प्रधान सचिव ने बोकारो, देवघर, खुर्ती, बनबाद और हजारीबाग में रांची की तर्ज पर स्मार्ट सिटी विकसित करने के लिए भूमि चिह्नित करने के निर्देश दिए। इसके लिए संबंधित निकायों को जिला उपयुक्तों से समन्वय कर जमीन उपलब्ध कराने को कहा गया।

होल्डिंग टैक्स कलेक्शन बढ़ाने का निर्देश
प्रधान सचिव ने डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण की व्यवस्था को प्रभावी बनाने पर बल देते हुए कहा कि हर घर पर क्यूआर कोड अंकित किया जाए। जिन निकायों में अभी तक यह व्यवस्था नहीं है, वहां शीघ्र रिपोर्ट भेजी जाए ताकि सुडा और नगर निकाय मिलकर इसकी व्यवस्था कर सकें। साथ ही उन्होंने कहा कि बिना प्रोसेस किए सोलिंग वेस्ट को डंप न किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रॉपर्टी टैक्स बढ़ाकर नगर निकायों को आंतरिक संसाधन मजबूत करें। राज्य में वर्तमान में 4.9 लाख संपत्तियां टैक्स के दायरे में हैं, जिसे बढ़ाकर 200 करोड़ की आमदनी की जा सकती है।

शहरी सौंदर्यीकरण पर विशेष जोर

प्रधान सचिव ने निर्देश दिया कि रांची समेत सभी नगर निकायों में स्ट्रीट लाइट, फुटपाथ, डिवाइडर, साइनेज, जेब्रा क्रॉसिंग आदि का कार्य उच्च गुणवत्ता के साथ कराया जाए। डिवाइडर की पेंटिंग और पोथों की सुंदर आकृति में छटाई कर सौंदर्यीकरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि केवल मुख्य सड़कों तक ही सफाई सीमित न रहे, बल्कि शहर के भीतरी और सुदूर इलाकों में भी विशेष सफाई अभियान चलाया जाए। छठ पूजा के मद्देनजर तालाबों, नदियों और जलाशयों की सफाई, घाट निर्माण, बैरिकेडिंग और विस्फोट के बाद समुचित निस्तारण की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया गया।

राज्य में युवाओं को रोजगार देने के मोर्चे पर फेल हुई हेमंत सरकार : प्रतुल शाहदेव

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में बेरोजगारी को लेकर राजनीतिक सरगमों तेज हो गई है। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने हेमंत सोरेन सरकार को रोजगार के मुद्दे पर घेरते हुए कहा कि हेमंत सरकार पार्ट टू अपने वादों पर खरा नहीं उतर सकी है। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन ने 5 वर्षों में 10 लाख सरकारी नौकरियों का वादा किया था, लेकिन सत्ता में आए 9 महीने हो गए। अब तक सिर्फ 1,556 युवाओं को ही नियुक्ति पत्र मिले हैं। यह कुल लक्ष्य का मात्र 0.15% है। प्रतुल ने आरोप लगाया कि

युवाओं की आवाज बन रही बीजेपी
प्रतुल ने सरकार पर युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करने का आरोप लगाया और कहा कि भाजपा युवाओं की आवाज बनकर सरकार से हर वादे पर जवाब मांगती रहेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि मौजूदा रूपांतर को देखते हुए 10 लाख नौकरियों का वादा कभी पूरा नहीं हो पाएगा।

जबकि घोषणा पत्र में कहा गया था कि पहले 6 महीने में इसकी योजना सामने लाई जाएगी। उन्होंने कहा कि अधिकतर नियुक्तियां शिक्षा विभाग में सहायक अध्यापक, लैब असिस्टेंट और नगर सेवा संवर्ग जैसी सीमित श्रेणियों में हुई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि पूर्ववर्ती कार्यकाल में हेमंत सोरेन ने 25 लाख नौकरियों का वादा किया था, जिसका कोई टोस हिसाब आज तक जनता को नहीं दिया गया। झारखंड लोक सेवा आयोग द्वारा 342 अभ्यर्थियों को सफल घोषित किए जाने के बावजूद अब तक उन्हें नियुक्ति पत्र नहीं मिला है।

कल 200 डॉक्टरों को सौंपे जाएंगे नियुक्ति पत्र : इरफान अंसारी

RANCHI : झारखंड की स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए राज्य सरकार 25 सितंबर को 200 डॉक्टरों की नियुक्ति करने जा रही है। इसमें 100 स्थायी सरकारी डॉक्टर और 100 अनुबंध पर नियुक्त किए जाने वाले डॉक्टर शामिल होंगे। राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन डॉक्टरों को नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. मंत्री इरफान अंसारी ने मंगलवार को बताया कि यह अबतक की सबसे बड़ी नियुक्ति प्रक्रिया है, जिसका सीधा लाभ गांव और कस्बों के लोगों को मिलेगा। हाल ही में विभाग ने 91 सामुदायिक स्वास्थ्य पदाधिकारी और 126 सॉवदा डॉक्टरों की भी नियुक्ति की है।

रोजगार पर हेमंत सरकार गंभीर, नियुक्तियों का रोडमैप हो चुका है तैयार : सोनाल शांति

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में रोजगार को लेकर जारी सियासी जंग के बीच प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने भाजपा पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि भाजपा झूठ, फरेब और बेईमानी के सहारे जनता को गुमराह कर रही है। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार रोजगार देने को लेकर पूरी तरह गंभीर है और विभिन्न विभागों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, नगर विकास, खेलकूद आदि में हजारों नियुक्ति पत्र वितरित किए गए हैं। सहायक आचार्य के पदों पर भी नियुक्तियां की गई हैं, लेकिन भाजपा नेताओं को धुंध भरे चर्म के कारण युवाओं की खुशी और नियुक्ति प्रक्रिया दिखाई नहीं देती। उन्होंने



बताया कि सरकार फरवरी 2026 तक 40,000 से अधिक नियुक्तियों के लिए स्पष्ट रोडमैप जारी कर चुकी है, जिस पर गंभीरता से कार्य चल रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा का 'पीआईएल गैंग' नियुक्तियों को

बाधित करने की योजना में लगा हुआ है, जिससे बचने के लिए सरकार बेहद सतर्कता से कदम उठा रही है। उन्होंने केंद्र की मोदी सरकार पर भी हमला करते हुए कहा कि भाजपा ने हर साल 2 करोड़ रोजगार देने का वादा किया था, लेकिन 11 वर्षों में 22 करोड़ नौकरियों में से 20 लाख भी नहीं दे पाई। इंटरनेशनल स्कोम में भी वादे के अनुसार 20 लाख में सिर्फ 8,700 युवाओं को ही इंटरनेशनल मिल पाई। बजट में आवंटित 2000 करोड़ में से सिर्फ 50 करोड़ खर्च किए गए। उन्होंने कहा कि भाजपा युवाओं को कलम की जगह तलवार थमाना चाहती है। कांग्रेस युवाओं के भविष्य के प्रति प्रतिबद्ध है।

पर्व-त्योहार

26 सितंबर को ही खुल जाएंगे कुछ पूजा पंडालों के पट

मां ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना से भक्तिमय हुआ माहौल

PHOTON NEWS RANCHI : नवरात्र के दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना पूरे श्रद्धा और भक्ति भाव से की गई। मान्यता है कि माता ब्रह्मचारिणी तपस्या और आचरण की प्रतीक हैं। भक्त अपने मन को माता के चरणों में एकाग्र कर जप-तप करते हैं। राजधानी रांची में कई पंडालों में कलश स्थापना और उसके बाद पूजा-अर्चना से शहर का माहौल भक्तिमय हो गया है। हालांकि, कुछ प्रमुख पूजा समितियों में 26 सितंबर को पट खोले जाएंगे। रांची रेलवे स्टेशन पर भव्य पूजा पंडाल का निर्माण हो रहा है। इसका दुर्गा पूजा कमेटी का पंडाल दोस बार राजस्थान के शाही महलों से प्रेरित है। पंडाल की ऊंचाई लगभग 70 फीट है और अंदर शीश

■ राजस्थान के शाही महलों से प्रेरित होकर बन रहा कोकर का पूजा पंडाल
■ पंडाल के अंदर शीश महल जैसी की जा रही भव्य सजावट
■ पंडाल और प्रतिमा को अंतिम रूप देने में दिन-रात जुटे हैं बंगाल के कारीगर



महल जैसी भव्य सजावट देखने को मिलेगी। राजस्थान की झलक को और जीवंत बनाने के लिए ऊंट और स्थानीय लोगों के पुतले भी लगाए जाएंगे। पंडाल और प्रतिमा का निर्माण बंगाल के कारीगरों द्वारा किया जा रहा है। प्रतिमा की ऊंचाई करीब 15 फीट होगी। समिति ने बताया कि पंडाल निर्माण में करीब

हरमू के पंडाल में वृंदावन के प्रेम मंदिर की झलक
हरमू का पंडाल इस बार श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण रहेगा। लगभग 70 लाख रुपये की लागत से तैयार हो रहा यह पंडाल वृंदावन स्थित प्रसिद्ध प्रेम मंदिर की तर्ज पर बनाया जा रहा है। मूर्तियों का निर्माण कोलकाता के कलाकारों द्वारा किया जा रहा है। इस पंडाल की खासियत यह होगी कि दुर्गा पूजा के दौरान यहां कृष्ण लीला का आयोजन किया जाएगा, जो भक्तों और दर्शकों के लिए अद्वितीय अनुभव होगा। यहां भी पट 26 सितंबर को खोले जाएंगे। नवरात्र की रौनक के साथ राजधानी रांची के पंडाल एक और भक्तिभाव का केंद्र बन रहे हैं, तो दूसरी ओर कलात्मकता और भव्यता की मिसाल भी पेश कर रहे हैं।

45 लाख रुपये की लागत आ रही है और अगले 2-3 दिनों में यह पूरी तरह तैयार हो जाएगा।

झामुमो की इटकी प्रखंड समिति लिए प्रस्तावित नामों पर लगी मुहर

RANCHI : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के इटकी प्रखंड समिति गठन करने के लिए मंगलवार को इटकी के त्रिविधा चौक (गुलाम अली चौक) के पास सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रांची जिला संयोजक मंडली सदस्य धर्मेश सिंह ने की। इसके साथ ही सर्वसम्मति के साथ झामुमो इटकी प्रखंड समिति के विभिन्न पद के नामों के प्रस्ताव पर सहमति बनी। इसमें अध्यक्ष पद के लिए वसीम इकबाल अंसारी, उपाध्यक्ष पद के लिए रफीक कुरैशी, आशिक इलाही और जॉन सलिल तिकारी, सचिव पद के लिए सिरिल लकड़ा और कोषाध्यक्ष पद के लिए रफीक आलम अंसारी को मनोनित किया गया।

विभिन्न अंचलों में लगा जनता दरबार लबित मामलों का किया गया निपटारा

PHOTON NEWS RANCHI : मंगलवार को उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री के निर्देश पर रांची जिले के विभिन्न अंचलों में जनता दरबार का आयोजन किया गया। सभी अंचलों में अंचल अधिकारियों और राज्यस्व उप-निरीक्षकों की उपस्थिति में जनता दरबार में बड़ी संख्या में आम लोग ने भाग लिया और अपनी समस्याएं सुनाईं। जनता दरबार का उद्देश्य नागरिकों के राजस्व, प्रमाण पत्र और पेंशन संबंधी समस्याओं का त्वरित, पारदर्शी और निष्पक्ष समाधान सुनिश्चित करना है। मौके पर ही कई मामलों का निपटारा किया गया, जिससे लोगों को तत्काल राहत मिली। उपायुक्त ने कहा कि जनता दरबार आम जनता की समस्याओं के त्वरित समाधान का सशक्त माध्यम है और इसे और अधिक



इन मामलों का निपटारा
■ सीमांकन एवं मापी से संबंधित मामले
■ अवैध जमाबंदी की जांच
■ प्रमाण पत्र (जैसे- जाति, आवासीय, आय, चरित्र, एनसीएल) निर्गत
■ भूमि अभिलेखों में सुधार
■ पेंशन संबंधी आवेदन

प्रभावी बनाने के लिए जिला प्रशासन लगातार प्रयासरत है।

समाचार सार

नारी उत्पीड़न के विरोध में निकाला गया जुलूस

GHATSILA : नारी उत्पीड़न के विरोध में गल्स प्रोटिस्ट संस्थान की ओर मंगलवार को जुलूस निकाला गया, जो काशीदा पंचायत के प्रेमनगर गांव से गोपालपुर ओवरब्रिज होते हुए एसडीओ कार्यालय पहुंचा। विरोध जुलूस में काफी संख्या में महिलाएं थीं, जिन्होंने कई तरह के स्लोगन लिखी तख्तियां हाथ में रखी थीं। इस दौरान वे नारेबाजी भी कर रही थीं। उनकी मांगों में हर एक नारी की आर्थिक नैतिक व्यवस्था में सुधार हो, चलचित्र नाटक विज्ञापन में नारी देह के प्रदर्शन पर कठोर कार्रवाई हो, महिलाओं को मुफ्त शिक्षा दी जाए... आदि थे। प्रदर्शन में अव्युक्ति आनंद रूपा आचार्या, आदित्या आचार्या, आतिशा आचार्या, जयश्री राय, वैशाली चाउलिवा सहित अन्य शामिल थीं।

बहरागोड़ा पुलिस ने जब्त किए बालू लदे दो डंपर

GHATSILA : पूर्वी सिंहभूम जिले की ओडिशा सीमा पर बहरागोड़ा थाना की पुलिस ने बालू लदे दो डंपर जब्त किए हैं। गुप्त सूचना के आधार पर यह छापेमारी सोमवार को देर रात राष्ट्रीय उच्चपथ-49 पर जामशेला के पास हुई। बालू लेकर डंपर ओडिशा से आ रहा था। बहरागोड़ा के थाना प्रभारी शंकर प्रसाद कुशवाहा ने बताया कि एक डंपर पर नंबरप्लेट नहीं था। दोनों वाहनों को जब्त कर थाने लाया गया है। इस संबंध में अंचलाधिकारी राजाराम सिंह मुंडा ने कहा कि अवैध खनन और परिवहन के खिलाफ लगातार छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है।

ग्रेजुएट कॉलेज में याद किए गए दिनकर

JAMSHEDPUR : साकची स्थित ग्रेजुएट कॉलेज में मंगलवार को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती मनाई गई। हिंदी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार पांडेय ने श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद दिनकर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर सेमेस्टर-4 की छात्रा श्रुति चौधरी, नुपु डे तथा सेमेस्टर 2 की छात्रा नंदनी सेन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सेमेस्टर 4 की छात्रा अनुभा कुमारी व धन्यवाद ज्ञापन सेमेस्टर 2 की छात्रा लक्ष्मी कुमारी ने किया। इस अवसर पर, प्रियंका महतो, दिव्या कुमारी, आरती कुमारी, वर्षा गोरगई, प्रिया तापये, लवकी कुमारी, दीपिका तिग्गा आदि छात्राएं भी उपस्थित थीं।

अरका जैन में विदेशी छात्रों का हुआ स्वागत

JAMSHEDPUR : अरका जैन यूनिवर्सिटी मंगलवार को तब गर्व का विषय बन गया, जब यहां विदेशी छात्रों का स्वागत किया गया। विश्वविद्यालय में तंजानिया, अफ्रीका, बांग्लादेश और नेपाल सहित अन्य देशों से छात्र पढ़ने आए हैं। इसके अलावा उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, मणिपुर, त्रिपुरा, शिलांग और गुवाहाटी से भी बड़ी संख्या में विद्यार्थी यहां विश्वविद्यालय ने बताया कि विदेशी छात्रों की सुविधा के लिए एंबेसी और स्थानीय स्तर पर आवश्यक सभी औपचारिकता पूर्ण कर ली गई है, ताकि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जमशेदपुर में पार्किंग को रेलवे बना रहा मुनाफाखोरी का धंधा : सरयू राय

पैसैंजर होने चाहिए रेलवे की शीर्ष प्राथमिकता में

PHOTON NEWS JSR : जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय द्वारा विगत दिनों पांच घंटे पार्किंग के एवज में 5310 रुपये का घुमाना टोकने से संबंधित घटना के संबंध में 29 अगस्त को लिखे पत्र का रेलवे के सहायक वाणिज्य प्रबंधक, चक्रधरपुर ने जवाब दिया है। रेलवे की तरफ से लिखे पत्र में कहा गया है कि पार्किंग की ठेकेदारी ई-नीलामी के माध्यम से होती है। इसमें रेलवे की कोई भूमिका नहीं होती। इस पर विधायक सरयू राय ने कहा कि रेलवे को यह पता है कि जमशेदपुर स्थित टाटानगर रेलवे स्टेशन पर कितनी गाड़ियां आती-जाती हैं। पैसैंजर कितने आते-जाते हैं। ऐसी स्थिति में रेलवे की पार्किंग बहुत ऊंची दरों पर दी जाती है और रेलवे मौन रहता है। ऐसे में यह क्यों न माना जाए कि रेलवे पार्किंग को मुनाफाखोरी का धंधा बना रहा है। इस पत्र में रेल प्रबंधन ने जो तर्क दिए हैं, वो विश्वसनीय नहीं है। रेलवे की पहली जिम्मेदारी है, यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखना, यात्रियों को छोड़ने-ले आने वाले मित्रों-सगे-संबंधियों की सुविधा को प्राथमिकता में रखना। कोई व्यक्ति या संस्था अगर ऊंची दर पर पार्किंग का ठेका लेगी, तो निश्चित तौर पर वह अनुचित कार्य करेगी, ताकि वह इससे ज्यादा मुनाफा कमा सके। रेलवे को इस पर विचार करना चाहिए। सरयू राय ने कहा कि रेलवे को यह बताना चाहिए कि पार्किंग को लेकर झगड़ा-झड़प जमशेदपुर में ही क्यों होता है। इसका मतलब है कि रेलवे प्रबंधन की मॉनिटरिंग सही नहीं है। जो रेट रेलवे ने तय किया, उसका पालन हो रहा है या नहीं, यह देखना रेलवे का ही तो काम है। केवल पैसैंजर या उनके दोस्तों-सगे-संबंधियों को दोषी ठहराना ठीक नहीं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

हाटगामहरिया-जैतगढ़ रोड पर पलटा टैंकर, डीजल लूटने उमड़ पड़ी भीड़

खेतों व सड़क पर फैल गया हजारों लीटर तेल, आग लगने से हो सकता था बड़ा हादसा



सड़क किनारे पलटा टैंकर व खेत के गड्ढों से डीजल बटोरते शायीण

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिले के हाटगामहरिया-जैतगढ़ मुख्य मार्ग पर मंगलवार की सुबह तब अफरातफरी मच गई, जब डीजल से भरा एक टैंकर पलट गया। अनियंत्रित होकर सड़क किनारे टैंकर पलटते ही हजारों लीटर डीजल खेतों और सड़क पर फैल गया। घटना की जानकारी फैलते ही आसपास के गांवों से लोग बोलत, बाल्टी, ड्रम और डेगची आदि बर्तन लेकर पहुंच गए और

कुड़मियों के 'रेल टेका' आंदोलन में अमित महतो सहित 500 लोगों पर मामला दर्ज



सोनुवा रेलवे स्टेशन पर 20 सितंबर को आंदोलन करते अमित महतो व अन्य (फाइल फोटो)

PHOTON NEWS CKP : चक्रधरपुर में आदिवासी कुड़मी समाज द्वारा अनुसूचित जनजाति का दर्जा पाने के लिए 20 सितंबर को रेल टेका (रोको) आंदोलन किया गया था। सोनुवा रेलवे स्टेशन में करीब छह घंटे तक रेल ट्रैक जाम किया गया था। इस मामले में स्टेशन प्रबंधक के बयान पर आदिवासी कुड़मी समाज के नेता अमित महतो समेत 500 अज्ञात लोगों पर चक्रधरपुर के

आरपीएफ थाना में मामला दर्ज किया गया है। आरपीएफ ने ट्रैक जाम में शामिल अन्य नेताओं की तस्वीरें ली हैं, जिससे आरोपियों की पहचान की जा रही है। कुड़मी समाज के आंदोलन से कई ट्रेनों की आवाजाही बाधित हुई थी। रेलवे पुलिस ने इस मामले में रेलवे एक्ट की धारा लगाई है, जिसमें रेलवे इलाका में हल्ला मचाने, रेलकर्मियों को अपना कर्तव्य पालन में अवरोध उत्पन्न करने,

में लगे रहे। इस हादसे में गनीमत रही कि किसी की जान नहीं गई। टैंकर चालक को हल्की चोटें आईं और वह सुरक्षित है। जानकारों का कहना है कि इतनी बड़ी मात्रा में डीजल का फैलना बेहद खतरनाक हो सकता था।

में लगे रहे। इस हादसे में गनीमत रही कि किसी की जान नहीं गई। टैंकर चालक को हल्की चोटें आईं और वह सुरक्षित है। जानकारों का कहना है कि इतनी बड़ी मात्रा में डीजल का फैलना बेहद खतरनाक हो सकता था।

कोल्हान विवि के दीक्षांत समारोह में सिर्फ टॉपर्स को मिलेगी एंट्री



JAMSHEDPUR : कोल्हान विश्वविद्यालय में लंबे इंतजार के बाद नवंबर के अंतिम सप्ताह में दीक्षांत समारोह का आयोजन करने का निर्णय लिया गया है। मंगलवार को कुलपति डॉ. अजिता गुप्ता की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि समारोह में पिछले चार सत्रों के लगभग डेढ़ लाख छात्रों को डिग्री प्रदान की जाएगी। लेकिन, विशेष रूप से केवल टॉपर (गोल्ड मेडल पाने वाले) व पीपल्स डी अवार्ड वाले छात्र ही समारोह में शामिल होंगे। छात्रों की अधिक संख्या को देखते हुए विवि ने यह फैसला लिया है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने समारोह की तैयारियों के लिए दो दिनों के भीतर एक विशेष कमेटी गठित करने का फैसला किया है। राज्यपाल ने भी मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किए जाने की संभावना व्यक्त की है। राजभवन ने अनुमति मिलने के बाद विवि समारोह की अंतिम तिथि घोषित करेगा।

बहरागोड़ा में ब्राउन शुगर के साथ चार तस्क़र गिरफ्तार



पत्रकारों को मानले की जानकारी देते शायीण एसपी अरुण गर्ग (फोटो न्यूज)

GHATSILA : पूर्वी सिंहभूम जिले के बहरागोड़ा थाना क्षेत्र में पुलिस ने सोमवार को ब्राउन शुगर तस्क़रों में शामिल चार युवकों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने उनके पास से 106 पड़िया ब्राउन शुगर के साथ बाइक और मोबाइल फोन भी जब्त किया है। ग्रामीण एसपी ऋषभ गर्ग ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि बरसोल की ओर से बाइक पर ब्राउन शुगर लाई जा रही है। जांच के लिए घाटशिला

के एसडीपीओ अजीत कजूर के नेतृत्व में एक विशेष छापेमारी दल बनाया गया। छापेमारी दल ने ग्राम भाटियाल स्थित एनएच-49 पर वृंदावन होटल के पास संदिग्ध बाइक सवार को रोकने की कोशिश की, लेकिन चारों युवक भागने लगे। पुलिस ने पीछा कर सभी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान चंदन खटुआ, राकेश कुमार षण्ड, राजा रजक और अंशु मिश्रा के रूप में हुई है।

तोमर सत्येंद्र के भजनों का हुआ विमोचन



JAMSHEDPUR : गीतकार तोमर सत्येंद्र सिंह द्वारा लिखे व विकेश सहाय के सुरों से सजे अम्बे माता के भजन 'माई कईके बाघ के सवारी' का विमोचन मंगलवार को हुआ। साकची स्थित मनोकामना मंदिर में जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय ने अलबम का लोकार्पण किया। इस दौरान शहर के तबला वादक सुनील सहाय, गायक विकेश सहाय, मंदिर कमेटी के वृजेश सिंह आदि भी उपस्थित थे।

JAMSHEDPUR : गीतकार तोमर सत्येंद्र सिंह द्वारा लिखे व विकेश सहाय के सुरों से सजे अम्बे माता के भजन 'माई कईके बाघ के सवारी' का विमोचन मंगलवार को हुआ। साकची स्थित मनोकामना मंदिर में जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय ने अलबम का लोकार्पण किया। इस दौरान शहर के तबला वादक सुनील सहाय, गायक विकेश सहाय, मंदिर कमेटी के वृजेश सिंह आदि भी उपस्थित थे।

प्लास्टिक फैक्ट्री में भीषण आग लाखों के नुकसान की आशंका



कंपनी फिरीशर में लगी आग (फोटो न्यूज)

PHOTON NEWS SERAIKELA : झारखंड में सरायकेला-खरसावां जिले के आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र फेज-2 में स्थित प्लास्टिक के ग्लास बनाने वाली एक फैक्ट्री में मंगलवार की सुबह भीषण आग लग गयी। आग इतनी तेज थी कि कुछ ही देर में पूरी फैक्ट्री को अपनी चपेट में ले लिया। आग लगने की वजहों को फिलहाल आंदोलन की झलक भी देखते हैं। अंजनी प्लास्टिक इंडस्ट्रीज नाम की फैक्ट्री में प्लास्टिक ग्लास बनाने का कच्चा माल (रॉ मैटेरियल) भारी मात्रा में मौजूद था, जिससे आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और सारा सामान जलकर राख हो गया। आग लगने की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की तीन गाड़ियां पहुंचीं और आग पर काबू पाने की कोशिश शुरू कर दी।

आग इतनी भयंकर थी कि पूरे इलाके में घना धुआं फैल गया और आसपास के मोहल्लों में अफरा-तफरी मच गई। दमकल कर्मियों के साथ स्थानीय लोग भी आग बुझाने में जुटे रहे। हालांकि, खबर लिखे जाने तक किसी तरह

की जनहानि की सूचना नहीं मिली है, लेकिन आग से फैक्ट्री के संचालक को लाखों रुपये के नुकसान होने की आशंका जताई जा रही है। पुलिस और प्रशासन आग लगने के कारणों की जांच में जुट गया है।

कोल्हान में 1857 से हो रही दुर्गा पूजा, पूजन से विसर्जन तक दिखती है इतिहास की झलक

मशाल जुलूस के साथ होता आ रहा मां दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन

RAJESHWAR PANDEY, CHAIBASA : कोल्हान प्रमंडल के पश्चिमी सिंहभूम जिले में चक्रधरपुर की पुरानीबस्ती में होने वाली दुर्गापूजा इस मामले में मिसाल है कि यहां 113 वर्ष बाद भी परंपरा नहीं बदली है। एक रूपा आदि दुर्गा माता की पूजा की पहचान भी अलग है। यहां 1857 से पूजा हो रही है। हालांकि, 1912 से आदि दुर्गा पूजा कमेटी की ओर से मां दुर्गा की पूजा-अर्चना की जा रही है। इस वर्ष 113 साल पुराने दुर्गा पूजा की सबसे प्रमुख पहचान विजयादशमी के दिन मां दुर्गा की प्रतिमा के विसर्जन के वक्त विशाल मशाल जुलूस निकाला जाता है। पुराने जमाने की तरह हाथों में मशाल लिए सैकड़ों लोग मां दुर्गा की विशाल प्रतिमा को कंधों पर उठाकर जय दुर्गा... के नारों के



कोरोना महामारी में भी जारी रही परंपरा

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी राजधानी की परंपरा को बदल नहीं सकी। उस दौरान भी वर्षों पुरानी परंपरा का निर्वहण किया गया। सिंहभूम में मां दुर्गा की आराधना और पूजा का इतिहास सदियों पुराना है। सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक पूजा चक्रधरपुर की पुरानाबस्ती की श्री श्री आदि पूजा समिति की मूर्ति विसर्जन की परंपरा है। यहां करीब पांच टन की प्रतिमा को 120 लोग कंधों पर ढोकर विसर्जन करते हैं। प्रतिमा की ऊंचाई 12 से 15 फीट रहती है। आदि दुर्गा पूजा समिति का विसर्जन जुलूस अपने आप में अनोखा है, जिसे देखने के लिए दूरदराज के हजारों लोग विजयादशमी में पहुंचते हैं।

साथ विसर्जन जुलूस निकालते हैं। शुरुआत 1857 में पोड़ाहाट के महाराजा अर्जुन सिंह ने की थी।



ऐसा है इतिहास

1857 ई में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल संपूर्ण देश भर की भाति पोड़ाहाट क्षेत्र में भी उठा था। उस समय पोड़ाहाट नरेश महाराजा अर्जुन सिंह इस क्षेत्र में स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे इस दौरान अंग्रेजों के साथ संघर्ष कर रहे प्रथम स्वतंत्रता सेनानी जगू दीवान समेत अन्य 42 लोगों को अंग्रेजों ने पकड़ कर फासी दे दी थी। इस बीच महाराजा अर्जुन सिंह कई महीनों से भूमिगत हो गए थे। अंग्रेजों से संघर्ष के दौरान ही दुर्गा पूजा आ गयी। अंग्रेजों को मालूम था कि महाराजा अर्जुन सिंह राजमहल जरूर आएंगे। अंग्रेजों ने राजमहल की नाकेबंदी कर रखी थी। इसकी जानकारी उनके शुभचिंतकों और जनता को हो गई। विजयादशमी के दिन अचानक असंख्य लोग मशालों और हथियारों के साथ राजमहल पहुंच गए। उसी बीच महाराजा अर्जुन सिंह ने अंग्रेजों को चकमा देकर पूजा-अर्चना की और पूनः भूमिगत हो गए। उसी परंपरा का आज भी दुर्गा पूजा के विसर्जन के दिन निर्वहण होता है।

मां दुर्गा का प्रतीक है मशाल जुलूस

मशाल जुलूस महाशक्तिमयी मां दुर्गा का प्रतीक है। यह परंपरा आज भी जारी है। इसमें लोग प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन की झलक भी देखते हैं। औपचारिक रूप से 1912 में नगर की जनता को पूजा अर्चना का भार सौंपे जाने के काफी पहले राजधानी के स्थाना के लगभग 800 वर्ष पूर्व से ही यहां आदि शक्ति के रूप मां दुर्गा की पूजा विधिपूर्वक की जा रही है। वर्तमान में चक्रधरपुर शहर की पुरानीबस्ती स्थित गुड्डिका मंदिर में पूजा आयोजित की जाती है।

पहले राजमहल में होती थी दुर्गा पूजा

पोड़ाहाट के महाराजा अर्जुन सिंह और उनके पूर्वज यह पूजा अपने राजमहल में करते थे। 1912 में इस पूजा को आयोजित करने का दायित्व आम जनता को सौंपा गया।

श्रीश्री आदि दुर्गा पूजा समिति, पुरानीबस्ती

दयानंद पाणि की अध्यक्ष, लोयो मंडल, टूला पति, सपन मिस्त्री को उपाध्यक्ष चुना गया। सचिव झारखंड अल्पसंख्यक के पूर्व उपाध्यक्ष अशोक घाड़गी की मनोनीत किया गया। घाड़गी 1984 से सचिव हैं। 2025 में हो रही दुर्गा पूजा कमेटी में सहसचिव का दायित्व सुरज महाती, देवेन मंडल, जयपकाश दास तथा कोषाध्यक्ष पवित्र मोहन मंडल को सौंपा गया। बैठक में बिजन कुमार मंडल, बापी दास, रामकृष्ण मंडल, उत्तम नंदा, प्रकाश कुमार मंडल, आशीष कुमार नंदा, दीपक घाड़गी, असीम कुमार नंदा, सुदामा माझी, अश्विनी दास, अमरजोत, जगदीश नंदा, दीनबंधु दास, बुद्ध प्रमाणिक, कुबेर माझी, सुमित माझी, आकाश मंडल, भरत मोदक, विकास साहू, दिनेश जेना, अर्जुन महाती, विष्णु महाराणा, बिशु मंडल, अनूप मंडल, रमेश मंडल, आदित्य मंडल, वंदा मंडल, प्रमोद चंद पति, हितेंद्र शेखर घाड़गी, पुरुषोत्तम दास, निरंजन नंदा, निमाई दास, आरके मंडल, मनोज कुमार साहू, आशीष मंडल आदि सदस्य भी शामिल थे।

आर्थिक कार्यापलट करने वाली पहल

अमेरिका द्वारा लगाए गए अतिरिक्त टैरिफ से उबरने का प्रयास करती भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए डिजिटल डायमंड ने एक बड़ी उम्मीद जगाते हुए विदेशी निवेशकों का ध्यान भी अपनी तरफ खींचा है। हाल में आयोजित हुए सेमीकॉन इंडिया 2025 सम्मेलन में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने पूरी तरह स्वदेशी 32-बिट माइक्रो चिप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट की। इसे मात्र 30 महीनों में तैयार कर सेमीकंडक्टर आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। आज की दुनिया में माइक्रोचिप सिर्फ एक इलेक्ट्रॉनिक पुर्जा नहीं, बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था की घड़कन है। मोबाइल, लैपटॉप, आटोमोबाइल, रक्षा उपकरण, मेडिकल मशीनें हर जगह चिप की आवश्यकता है। बिना इनके हमारे रोजमर्रा के गैजेट्स और मशीनें अधूरी हैं। स्मार्टफोन, लैपटॉप, टीवी, स्मार्टवाच, इंटरनेट की गति आदि सभी सेमीकंडक्टर पर चलते हैं। आधुनिक गाड़ियां अब पूरी तरह इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम पर आधारित हैं, त्साकर इलेक्ट्रिक वाहनों में बैटरी मैनेजमेंट, सेंसर और नेविगेशन के लिए चिप बेहद जरूरी हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में काम आने वाली कई तरह की अत्याधुनिक मशीनों जैसे एमआरआई, सीटी स्कैन आदि में भी चिप की जरूरत होती है। बड़े पावर प्लांट्स, 5-जी नेटवर्क, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लाउड सर्विसेज सब सेमीकंडक्टर की बंदौलत ही चलते हैं। भारत प्रतिवर्ष 20 से 25 अरब डालर से ज्यादा के सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक चिप आयात करता है। आने वाले वर्षों में ये तस्वीर बदल सकती है, क्योंकि नए मिशन के तहत भारत खुद अपने सेमीकंडक्टर बना सकता है। भारत का मकसद सिर्फ घरेलू जरूरतें ही पूरी करना नहीं है, बल्कि दुनिया के सेमीकंडक्टर बाजार में अपनी बड़ी हिस्सेदारी बनाना भी है। 2023 में भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 38 अरब डालर था, जो वित्त वर्ष 2024-25 में बढ़कर 40 से 50 अरब डालर का हो गया। 2030 तक यह बाजार एक ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर से भी ज्यादा का हो जाएगा। यदि भारत इसमें से पांच से 10 प्रतिशत की हिस्सेदारी भी हासिल करता है, तो देश की जीडीपी दो से तीन प्रतिशत तक बढ़ सकती है। इससे भारत के पांच ट्रिलियन डालर इकॉनमी बनने में तेजी आएगी। सेमीकंडक्टर के चार नए प्रोजेक्ट लांच हो चुके हैं, जबकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के संयोग से छह प्रोजेक्ट लांच होने के क्रम में हैं। भारत आज ताइवान, कोरिया, अमेरिका, चीन आदि देशों की महारत को चुनौती देने के लिए तैयार है। वैश्विक स्तर पर ताइवान का योगदान 66 प्रतिशत, 17 प्रतिशत दक्षिण कोरिया एवं आठ प्रतिशत योगदान चीन का है। माइक्रोचिप बनाने के लिए अत्याधुनिक प्लांट में हजारों इंजीनियर, तकनीशियन और ऑपरैटरों की आवश्यकता होती है। चिप निर्माण में सिलिकॉन वेफर, रसायन, विशेष गैस और पैकेजिंग सामग्री का उपयोग होता है। इनकी आपूर्ति और प्रबंधन के लिए देशभर में छोटे-बड़े उद्योग और कंपनियां जुड़ेंगी, जिससे अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर करोड़ों की संख्या में उत्पन्न होंगे। भारत पहले से ही आईटी और चिप डिजाइन में दुनिया का एक मजबूत केंद्र है। चिप डिजाइन, टेस्टिंग और साफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में लाखों उच्च कौशल वाले रोजगार उपलब्ध होंगे। माइक्रोचिप उद्योग से जुड़े परिवहन, गोदाम, सुरक्षा, सफाई और तकनीकी सेवाओं जैसे क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलेगा। सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के बाजार पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के लिए विशेष कोर्स, प्रशिक्षण केंद्र और अनुसंधान संस्थान विकसित किए जाएं, जिसके माध्यम से न केवल प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार होंगे, बल्कि शिक्षा क्षेत्र में भी शिक्षक, शोधकर्ता और ट्रेनर के रूप में बड़ी संख्या में नई नौकरियां निकलेंगी। सेमीकंडक्टर उद्योग में भारी मात्रा में पानी और बिजली की भी खपत होती है। भारत को इस उद्योग के विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन का भी ध्यान देना होगा। इसके लिए ग्रीन एनर्जी, रीसाइक्लिंग और प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों को प्राथमिकता देनी होगी। भारत को विशेष औद्योगिक क्षेत्रों का निर्माण करना होगा। चिप निर्माण एक अत्यंत तकनीकी प्रक्रिया है, जिसके लिए प्रशिक्षित इंजीनियर और टेक्नीशियन चाहिए। इसके लिए भारत को इंजीनियरिंग कालेजों, आईटीआइ और विश्वविद्यालयों में सेमीकंडक्टर से जुड़े विशेष कोर्स शुरू करने होंगे। विदेशी विशेषज्ञों से प्रशिक्षण और सहयोग भी जरूरी होगा, ताकि मानव संसाधन वैश्विक मानकों के अनुरूप तैयार हो सके। सेमीकंडक्टर उद्योग में प्रतिस्पर्धा का आधार अनुसंधान है। भारत को अपने आइआईटी, एनआईटी और निजी विश्वविद्यालयों को चिप डिजाइन और अनुसंधान से जोड़ना होगा। सरकार को नई तकनीकों पर काम करने वाले स्टार्टअप और रिसर्च सेंटर को आर्थिक सहायता और टैक्स में छूट प्रदान करनी होगी। भारत आज जिस गति से तकनीकी प्रगति कर रहा है, उसमें माइक्रोचिप उद्योग को सबसे बड़ा गेमचेंजर माना जा रहा है। इससे न सिर्फ चिप का आयात कम होगा, बल्कि कीमत कम होने से स्वदेशी एवं विदेशी बाजार में बहुत हासिल करने में भी हम आगे होंगे। इससे 2047 तक देश को विकसित बनाने का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

ANALYSIS



डॉ. मंयंक चतुर्वेदी

जब जोधपुर में 5 से 7 सितंबर तक संघ की अखिल भारतीय समन्वय बैठक संपन्न हुई, तो वहां का वातावरण केवल संगठनात्मक विमर्श तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें भविष्य का भारत गढ़ने का उत्साह और ऊर्जा भी साफ महसूस की जा सकती थी। सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने भारत माता के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए इस बैठक का आरंभ किया था, जिसके बाद विभिन्न सत्रों में देशभर से आए हुए प्रमुख संघ प्रेरित 32 संघटनों के 320 पदाधिकारी तथा महिला कार्यो का समन्वय देखने वाली कार्यकर्ताओं को अन्य संघ पदाधिकारियों का पाथेय एवं विमर्श के सूत्र मिले। सतत तीन दिवस चली इस बैठक के पश्चात जब पत्रकारों के बीच संगठन के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर द्वारा विचार साझा किए गए तो उन तमाम विचारों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की योजनाएं इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि संघ का दृष्टिकोण आज कितना व्यापक, सकारात्मक और राष्ट्रनिर्माणकारी है। शिक्षा, समाज, संस्कृति, परिवार, पर्यावरण, महिला शक्ति, जनजातीय समाज और राष्ट्रीय एकता इन सभी पहलुओं पर संघ ने इस बैठक में गहन विचार किया है। शिक्षा, समाज, संस्कृति, परिवार, पर्यावरण, महिला शक्ति, जनजातीय समाज और राष्ट्रीय एकता इन सभी पहलुओं पर संघ ने इस बैठक में गहन विचार किया है।

राष्ट्र जीवन की संघत्व धारा अपने शताब्दी मोड़ की ओर बढ़ रही है। आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ टीक उस पथ पर खड़ा है, जहां से अब कुछ ही दिनों बाद उसकी शताब्दी वर्ष की एक नई यात्रा आरंभ हो रही है। वस्तुतः यह संगठन केवल शाखाओं में खेलेते बच्चों या गणवेशधारी स्वयंसेवकों तक सीमित नहीं है। आज यह इससे कहीं आगे भारतीय समाज की आत्मा, संस्कृति और चेतना को जागृत करने वाली जीवंत धारा के रूप में दिखाई देता है। जब जोधपुर में 5 से 7 सितंबर तक संघ की अखिल भारतीय समन्वय बैठक संपन्न हुई, तो वहां का वातावरण केवल संगठनात्मक विमर्श तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें भविष्य का भारत गढ़ने का उत्साह और ऊर्जा भी साफ महसूस की जा सकती थी। सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने भारत माता के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए इस बैठक का आरंभ किया था, जिसके बाद विभिन्न सत्रों में देशभर से आए हुए प्रमुख संघ प्रेरित 32 संघटनों के 320 पदाधिकारी तथा महिला कार्यो का समन्वय देखने वाली कार्यकर्ताओं को अन्य संघ पदाधिकारियों का पाथेय एवं विमर्श के सूत्र मिले। सतत तीन दिवस चली इस बैठक के पश्चात जब पत्रकारों के बीच संगठन के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर द्वारा विचार साझा किए गए तो उन तमाम विचारों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की योजनाएं इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि संघ का दृष्टिकोण आज कितना व्यापक, सकारात्मक और राष्ट्रनिर्माणकारी है। शिक्षा, समाज, संस्कृति, परिवार, पर्यावरण, महिला शक्ति, जनजातीय समाज और राष्ट्रीय एकता इन सभी पहलुओं पर संघ ने इस बैठक में गहन विचार किया है।



निष्कर्ष रूप में उसका लक्ष्य केवल अपने संगठन को बड़ा बनाना नहीं, बल्कि भारत को हर क्षेत्र में शक्तिशाली बनाना है। बैठक में सबसे प्रमुख विषय शिक्षा रहा। यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी शिक्षा व्यवस्था में होती है। यदि शिक्षा सही दिशा में प्रवाहित हो तो वह समाज में आत्मविश्वास, राष्ट्रनिष्ठा और संस्कारों का संचार करती है। संघ ने शिक्षा क्षेत्र को अपने एजेंडे का केंद्र बनाकर यह स्पष्ट किया कि आने वाले भारत की नींव मजबूत करने का उसका पहला प्रयास शिक्षा सुधार ही है। विद्या भारती, भारतीय शिक्षण मंडल, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे संगठनों ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से जुड़े अनुभव प्रस्तुत किए। मातृभाषा में शिक्षा को प्राथमिक से उच्च स्तर तक प्रोत्साहित करने की पहल को विशेष महत्व दिया गया, क्योंकि मातृभाषा ही वह माध्यम है, जो बच्चे के मन और मस्तिष्क को सहजता से जोड़ता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास युवाओं में आत्मगौरव जगाने का साधन बनेगा। योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल और दर्शन जैसे

विषय केवल इतिहास की धाती नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन की समाधान में संवाद और जनसहयोग को सबसे महत्वपूर्ण मानता है। जनजातीय समाज और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों पर भी विस्तृत चर्चा यहां हुई है। इसमें यही तथ्य प्रमुखता से उभरे कि भारत की शक्ति तभी पूर्ण मानी जाएगी जब सबसे वंचित और दूरस्थ समाज भी राष्ट्रीय धारा से जुड़ा हो। नक्सली हिंसा में कमी आई है, किंतु गुमराह करने की कोशिशें अभी भी जारी हैं। संघ का मानना है कि शिक्षा, सेवा और संस्कार ही इस समस्या का स्थायी समाधान हैं। वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा छात्रावासों और शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से जनजातीय समाज तक राष्ट्रीय विचार और शिक्षा पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। यह केवल हिंसा को रोकने की दिशा नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता से भरे समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है। इस बैठक में संघ के शताब्दी वर्ष की योजनाओं का भी उल्लेख हुआ। यह वर्ष 2025 संघ का शताब्दी वर्ष है, जिसकी औपचारिक शुरुआत नागपुर में 2 अक्टूबर, 2025 को विजयादशमी उत्सव के साथ होगी। यह अवसर केवल

प्रयासों की सराहना की गई। इससे स्पष्ट है कि संघ समस्याओं के समाधान में संवाद और जनसहयोग को सबसे महत्वपूर्ण मानता है। जनजातीय समाज और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों पर भी विस्तृत चर्चा यहां हुई है। इसमें यही तथ्य प्रमुखता से उभरे कि भारत की शक्ति तभी पूर्ण मानी जाएगी जब सबसे वंचित और दूरस्थ समाज भी राष्ट्रीय धारा से जुड़ा हो। नक्सली हिंसा में कमी आई है, किंतु गुमराह करने की कोशिशें अभी भी जारी हैं। संघ का मानना है कि शिक्षा, सेवा और संस्कार ही इस समस्या का स्थायी समाधान हैं। वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा छात्रावासों और शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से जनजातीय समाज तक राष्ट्रीय विचार और शिक्षा पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। यह केवल हिंसा को रोकने की दिशा नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता से भरे समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है। इस बैठक में संघ के शताब्दी वर्ष की योजनाओं का भी उल्लेख हुआ। यह वर्ष 2025 संघ का शताब्दी वर्ष है, जिसकी औपचारिक शुरुआत नागपुर में 2 अक्टूबर, 2025 को विजयादशमी उत्सव के साथ होगी। यह अवसर केवल

स्मरण का नहीं, बल्कि नवसंकल्प का होगा। संघ ने तीन प्रमुख विषयों; पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता को अपनी योजनाओं का केंद्र बनाया है। जल, जंगल और जमीन की रक्षा किए बिना विकास अधूरा है, इसलिए पर्यावरण संरक्षण एक महत्वपूर्ण लक्ष्य लिया गया है। कुटुंब प्रबोधन पर बल देना इसलिए आवश्यक है कि परिवार भारतीय समाज की आत्मा है। यदि परिवार संस्था टूटती तो समाज और राष्ट्र दोनों कमजोर होंगे। इसी प्रकार नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना समय की आवश्यकता है। अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का पालन ही भारतीय लोकतंत्र को सशक्त बना सकता है। यहां ध्यान में आया कि संघ विचार से प्रेरित कार्यों में महिला सहभागिता भी लगातार बढ़ रही है। महिला कार्यकर्ताओं की भूमिका अब और प्रभावशाली होती जा रही है। क्रांटी भारतीय द्वारा महिला खिलाड़ियों में योग और अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत 887 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनके माध्यम से समाज में सकारात्मक मूल्य और संस्कारों का प्रसार किया गया। यह बताता है कि महिला शक्ति अब केवल सहभागी नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी भूमिका में भी सामने आ रही है। विद्या भारती में तो सतत ज्ञान के क्षेत्र में मातृशक्ति के योगदान देखने को मिलता ही है। इसी प्रकार एकल विद्यालय के माध्यम से देश के सुदूर कोने में भी महिलाएं ज्ञान का दीप जला रही हैं। संघ की इस बैठक में काशी-मथुरा, मतांतरण, घुसपैठ अन्य संवेदनशील मुद्दों पर भी गहन मंथन हुआ और संयुक्त रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि समस्याओं समाधान संघर्ष नहीं, बल्कि कानूनी प्रक्रिया और आपसी संवाद से निकाला जाना चाहिए।

जरूरी है हर मतदाता का सत्यापन

इतिहास गवाह है कि बड़े बदलाव अपने साथ आंधी-तूफान भी लाते हैं, लेकिन गर्द के बैटने के साथ सब स्पष्ट दिखाई भी देता है और स्थायी भी हो जाता है। बिहार में चुनाव आयोग की ओर से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का प्रभाव भी कुछ ऐसा ही है। चुनावी लोकतंत्र की स्वच्छता के लिए सबसे जरूरी मतदाता सूची होती है और उसे दुरुस्त रखने के लिए बिहार में एसआईआर की शुरुआत हुई तो विचार खड़ा हो गया। कुछ दलों की ओर से इसे सीधे-सीधे लोकतंत्र पर खतरा बताया गया, पर आरोप-प्रत्यारोप, अदालतों में हुए विशेषण और राजनीतिक मंचों पर दिए गए भाषणों के बीच यह तथ्य निकलकर सामने आया कि एसआईआर के जरिये मतदाता सूची का गहन परीक्षण जरूरी है और यह कैसे किया जाए, इसका अधिकार चुनाव आयोग को है। इस विवाद से एक बड़ा लाभ यह हुआ कि बिहार ही नहीं, पूरे देश के मतदाताओं को इसकी जानकारी हो गई कि वोट

लिस्ट में नाम जुड़वाना है तो उन्हें क्या करना है। वे यह भी समझ गए कि यह काम नेताओं के भरोसे नहीं हो सकता, क्योंकि बिहार में राजनीतिक दलों की ओर से जितने प्रतिवेदन आए, उनमें अधिकतर दूसरों के नाम कटवाने के लिए ही थे। इस विवाद से यह भी स्पष्ट हो गया कि पूरे देश में एसआईआर हो और मतदाता सूची एवं मतदाता पहचान पत्र को ऑटोमेटिक व्यवस्था से जोड़ने की निगरी शुरू हो। इसके लिए नगर निगम से लेकर विंदेश और गृह मंत्रालय तक को चुनाव आयोग से संबंधित डाटा शेयर करना होगा। देश के अलग-अलग हिस्सों में एसआईआर की प्रक्रिया 20-25 वर्षों के अंतराल में होती है। अब चुनाव आयोग ने जता दिया है कि देश में एक साथ एसआईआर कराया जाएगा। इस पर राजनीतिक दलों का रुख देखना रोचक होगा। हाल में इस मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट में एसआईआर को रूकवाने के लिए जिस तरह की दलीलें दी गईं, उन्हें देखते हुए मान लेना चाहिए कि

विपक्षी दलों की ओर से इसका विरोध ही किया जाएगा। हालांकि इस संवैधानिक प्रक्रिया को रोक पाना अब किसी के वश में नहीं है, पर पारदर्शिता की इस मुहिम को अभी राजनीतिक बवंडर के कई क्रम से गुजरना होगा। यह बहुत ही अचंचित करने वाला था कि बिहार में एसआईआर की जिस प्रक्रिया पर कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों ने आरोप लगाया कि इसमें कई लोगों और खासतौर से गरीबों के नाम कट दिए गए हैं, लेकिन जब सुप्रीम कोर्ट ने राजनीतिक दलों से कहा कि वे अपनी ओर से कोशिश करें कि जिनके नाम गलत तरीके से कटे हैं, उनके नाम जोड़े जाएं तो अधिकतर प्रतिवेदन नाम कटवाने की ही आए। सबसे हास्यास्पद स्थिति कांग्रेस की रही। पार्टी की ओर से दावा किया गया कि उसमें 89 लाख प्रतिवेदन दिए हैं, लेकिन सारे नाम कटवाने वाले थे। फिर अगर चुनाव आयोग ने 65 लाख मृत, स्थानांतरित और अनुत्तरित लोगों के नाम हटा दिए तो इतना उबाल क्यों। यह लोकतंत्र पर मंडरता खतरा कैसे था। विपक्षी

दलों का रुख अभी भी नहीं बदला है। पश्चिम बंगाल में सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस कमर कस कर रास्ता रोकने को तैयार है। एसआईआर की असली परीक्षा बंगाल में ही होगी। ध्यान रहे कि पिछले 15-20 वर्षों में पूरे देश में चुनावी हिंसा खत्म हो गई, लेकिन बंगाल अभी अपवाद है। यहां घुसपैठियों ने कई जिलों की जनसंख्या की को बदल दिया है। कई जगह चुनाव भारतीय वोटों के हाथों से निकलकर घुसपैठियों के हाथों निर्यात हो गया है। राज्य में पुलिस और अन्य अधिकारियों का भी जिस तरह राजनीतिकरण हुआ है, उसे देखते हुए एसआईआर के लिए विशेष तैयारी करनी होगी। संभव है गृह मंत्रालय को भूमिका निभानी पड़े। अच्छा होगा सुप्रीम कोर्ट से हस्तक्षेप हो। बंगाल में एसआईआर की प्रक्रिया को पछुता पालन हो जाए तो शेष देश में उसकी राह आसान हो जाएगी और उस बहस पर भी अंकुश लगेगा, जिसे संकीर्ण राजनीतिक कारणों से चलाने की कोशिश हो रही है। यह

अच्छा नहीं कि हर साल प्रदेशों में होने वाले चुनावों के वक्त देश विवादों में उलझा रहे, इसलिए भी एक साथ एसआईआर की जरूरत है। यह भी जरूरी है कि मतदाता सूची के शुद्धीकरण और अपडेशन की प्रक्रिया बदली जाए। घर-घर जाकर हर एक वोटर की पड़ताल तो सही है, लेकिन ऑटोमेशन की भी शुरुआत होनी चाहिए और राजनीतिक दलों की ओर से अड़ंगा लगाना बंद होना चाहिए। जरूरत के देखते हुए हर व्यक्ति अपने आधार को वर्तमान पते के अनुरूप अपडेट करता है। अच्छा हो कि आधार से मतदाता सूची जुड़ जाए। इससे एक से ज्यादा स्थानों पर मतदाता रजिस्टर ही नहीं होंगे। सिर्फ आधार से वोटर कार्ड को जोड़ना पर्याप्त नहीं। नागरिकता देना भले ही गृह मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में आता हो, लेकिन मतदाता सूची में नाम शामिल करने से पहले नागरिकता की पुष्टि करने का अधिकार चुनाव आयोग से छीना भी नहीं जा सकता। खासकर जब तक पूरे देश में एनआरसी न हो जाए

और देश के नागरिकों का रजिस्टर न तैयार हो जाए। विपक्ष इसके भी आड़े खड़ा है। देश को अपने नागरिकों और अवैध तरीके से आए लोगों के बारे में जानकारी होनी ही चाहिए। बिहार में जिन लगभग 65 लाख लोगों के नाम कटे हैं, उनमें से 22 लाख तो मृत थे। देश से हर साल औसतन दो लाख लोग नागरिकता छोड़कर विदेश में बस रहे हैं। फिलहाल चुनाव आयोग प्रदेश के पासपोर्ट कार्यालयों से संपर्क में रहता तो है, लेकिन डाटा शेयरिंग की ऑटोमेटिक व्यवस्था नहीं है। जाहिर है कि जब सही आंकड़े आपसी तो भ्रम की स्थिति पैदा होगी और उस वक्त जो भी विपक्ष में होगा, वह उस तूल देगा। फिलहाल देश में लगभग 98 करोड़ वोटर हैं। वषों से मतदाता सूची वृद्धिपूर्ण है और इसके लिए चुनाव आयोग भी जिम्मेदार है और राजनीतिक दलों के साथ एक हद तक मतदाता भी। उचित यह होगा कि इस मुद्दे पर सत्तापक्ष और विपक्ष एक साथ हों और उनमें व्यापक बहस हो।

Social Media Corner

सब के हक में...

पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य संवर्धन में अहम भूमिका निभाने वाले वृक्षों के रोपण के प्रति गांधीनारी की जनता में विशेष उत्साह है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी क्षेत्रवासी बढ़-चढ़कर वृक्षारोपण कर रहे हैं। आज गांधीनगर के वावेल में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत इफ्को द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में पीठा लगाया। आप भी अपने आसपास वृक्षारोपण कर प्रकृति के संरक्षण में भागीदार बनें।



(अमित शाह का 'एक्स' पर पोस्ट)

भारत में युवाओं की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है और इसका सीधा रिश्ता वोट चोरी से है। जब कोई सरकार जनता का विश्वास जीतकर सत्ता में आती है, तो उसका पहला कर्तव्य होता है युवाओं को रोजगार और अवसर देना। लेकिन भाजपा चुनाव इमानदारी से नहीं जीती, वो वोट चोरी और संस्थाओं को कैद कर के सत्ता में बने रहते हैं। इसीलिए बेरोजगारी 45 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच चुकी है। इसीलिए नौकरियां घट रही हैं, भर्ती प्रक्रियाएं ध्वस्त हो गई हैं और युवाओं का भविष्य अंधेरे में धकेला जा रहा है। इसीलिए हर परीक्षा पेपर लीक और हर भर्ती भ्रष्टाचार की कहानियों से जुड़ी रहती है। देश का युवा मेहनत करता है, सपने देखता है और अपने भविष्य के लिए संघर्ष करता है। लेकिन मोदी जी सिर्फ अपनी ढ़ग सेलिब्रिटीज से अपना गुणगान करवाने और अरबपतियों के मुनाफे में व्यस्त है। युवाओं की उम्मीदों को तोड़ना और उन्हें हताश करना इस सरकार की पहचान बन चुकी है। अब हालात बदल रहे हैं।



(राहुल गांधी का 'एक्स' पर पोस्ट)

अपनी मां की विकट आलोचना

बुकर पुरस्कार से सम्मानित अरुंधती राय की किताब 'मदर मैरी कम्स टू मी' आई है। बताते चले कि अरुंधती की मां का नाम भी मैरी राय था। कुछ अखबारों ने इस पुस्तक के बहुत से अंश छापे हैं। इन अंशों में अरुंधती ने अपनी मां की विकट आलोचना की है। जैसे ही इस किताब का मुखपृष्ठ प्रकाश में आया, डिजिटल मीडिया में बवाल मच गया। इस पुस्तक के आवरण पर एक लड़की का सिगरेट पीते चित्र छपा है। इसके समर्थक कहने लगे कि मात्र मुखपृष्ठ देखकर किसी किताब के बारे में निर्णय क्यों देना चाहिए। सिगरेट लड़कियां पिंप या न पिंप, यह उनकी मर्जी है। आप मारल पुलिसिंग करने वाले कौन होते हैं। नैतिकता के सारे प्रश्न स्त्रियों पर ही क्यों लादे जाते हैं। यह वह जमाना नहीं कि लड़कियां किसी की आलोचना से डर जाएंगी। बहुत सी लड़कियां और स्त्रियों ने सिगरेट पीते हुए अपने चित्र फेसबुक पर लगाए। यहां तक कि मुक्तिबोध और राजेंद्र यादव को भी बीच में ले आया गया कि उनकी तो किसी ने आलोचना नहीं की, जबकि मुक्तिबोध का बीड़ी पीते हुए चित्र उनकी पुस्तक के आवरण पर ही छपा था और राजेंद्र यादव का भी सिगार पीते हुए चित्र छपा था। विरोधियों ने कहा कि सवाल लड़कियों के सिगरेट पीने न पीने का नहीं है, सवाल स्वास्थ्य से जुड़ा है। इसे प्रगतिशीलता

और स्त्रीवाद से जोड़ना अच्छा नहीं है। यदि लड़के भी ऐसा करते हैं, तो वे आलोचना से परे नहीं हैं। यह भी कहा गया कि आखिर अरुंधती अपने अलगाववादी विचारों के लिए ही जानी जाती हैं। वह कर्मचार के लोगों का आचान कर चुकी हैं कि इस भूखे-नंगे हिंदुस्तान से अलग हो जाओ। कुछ दिन पहले यह लेखिका अपने मोहल्ले के पान वाले के पास गई थीं। देखा कि एक के बाद एक लड़कियां सिगरेट खरीदती हैं। किसी भी तरह से तंबाकू का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन और बहुत से डाक्टर बार-बार कहते रहे हैं। स्वास्थ्य की चिंता सिर्फ लड़कों को ही नहीं, लड़कियों को भी करनी चाहिए, लेकिन उस विचार को क्या कहा जाए, जो खान-पान को भी प्रगतिशीलता से जोड़ता है, और सवाल उठाने वालों को रूढ़िवादी, पितृसत्ता का प्रतीक आदि कहता है। कौन नहीं जानता कि किसी उत्पाद को बेचने के लिए प्रकाशकों और लेखकों द्वारा मिलकर कैसी-कैसी मार्केटिंग रणनीतियां बनाई जाती हैं। प्रकाशकों के लिए किताब एक उत्पाद ही है, जिसे उन्हें खूब बेचना है और भारी मुनाफा कमाना है। इसीलिए किसी खास बात को प्रगतिशीलता और किसी बात को रूढ़िवादिता

से जोड़ दिया जाता है। ऐसा करते वक्त अपने ही उस विचार का कतई ध्यान नहीं रखा जाता, जिसमें चुनाव की बात की जाती है। चुनाव में भी आखिर उस चीज को कैसे अच्छा माना जा सकता है, जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो। मार्केटिंग से जुड़ी एक वरिष्ठ अधिकारी ने कभी कहा था कि हम चाहें तो जहर को भी अमृत बनाकर बेच दें। बस, बेचना आना चाहिए। बहुत पहले सिगरेट बनाने वाली एक कंपनी के मालिक जार्ज वाशिंगटन हिल को महसूस हुआ कि उसकी बिक्री उतनी नहीं हो रही, जितनी होनी चाहिए। उन दिनों अमेरिका में स्त्री अधिकारों की बातें खूब हो रही थीं। वाशिंगटन हिल को जैसे समस्या का हल मिल गया। उन दिनों अमेरिका में भी स्त्रियां सिगरेट नहीं पीती थीं। वे एक मशहूर व्यक्ति एडवर्ड बर्नेज के पास पहुंचे। उन्होंने सिगरेट को स्त्री समानता और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ एक ताकतवर औजार की तरह पेश किया। अमेरिका की बहुत सी अमीर स्त्रियों को पैसे देकर इस बात के लिए मनाया कि वे सड़क पर सिगरेट पीती हुईं निकलें। आखिरकार 1929 में न्यूयार्क में सिगरेट के दिन रैली निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में स्त्रियां सिगरेट पी रही थीं। इस रैली को नाम दिया गया- टाचेंज आफ फ्रीडम। जैसा कि होना था, रैली को मीडिया में खूब जगह मिली और सिगरेट स्त्रियों के बीच छ गई।

Goddess Durga: Slayer of darkness

Sharad Navaratri begins today, commemorating the battle fought by the Goddess Durga against the titan Mahishasura, a shape-shifter long before the advent of the Harry Potter books. He was half-man, half-buffalo, and kept changing his form in the fight until he was finally killed when Durga plunged a trident into his chest. Mahishasura had gained a boon from Agni that no man could kill him. So, it had to be a woman, a possibility he found too absurd to remotely consider. He went on a rampage, terrorising the three worlds with his brutality. The celestials, led by Indra, were unable to vanquish Mahishasura. So, they strategised. They assembled in the mountains and decided to transfer their combined divine energies into the goddess Durga. Suitably armed, she set forth to challenge Mahishasura.

At first, he laughed at her, confident of his brute strength against a mere 'woman', failing to recognise her power as the Parashakti, or Supreme Goddess, for had he not beaten all the celestials soundly? When she didn't back down, he tried frightening her with threatening moves. Durga did not budge, only looked at him with calm contempt. Finally, he was forced to attack head-on, unable to believe that a feminine entity had the strength and skill to withstand him. In desperation, he tried to change from his original form, which was halfman, half-buffalo. In turn, he became a charging buffalo, a lion, a man and an elephant, before finally being killed. He returned in his dying throes to his original half-and-half form. At a symbolic level, Mahishasura represents arrogance, cruelty and ignorance, the dark forces that repeatedly threaten the smooth functioning of life. But they can be overcome by the bright, sincere strength that the goddess represents. That is the underlying message of the festival, with its fasts and its holdbacks from meat and drink—that the recommended physical detox should enable a process of mental detox. That we should ask ourselves honest questions without excuses or deflections, and without transferring blame. That we should pray for the strength and wisdom to identify whatever we may be doing that is harmful to others and to ourselves, and resolve to fix it. This is the greatest gift that the festival wants to give people—an annual calendar opportunity to update our software and give ourselves new beginnings, the chance to positively refresh both our thinking and our doing. The central text of the Sharad Navaratri is the Devi Mahatmyaham, meaning 'The Glory of the Goddess'. It is part of the Markandeya Purana, Chapters 81 to 93. Some scholars suggest that it dates back to the fifth century, while others propose the seventh. It is also known as the Durga Saptasati, or 'Seven Hundred Verses for Durga', which are arranged into thirteen chapters. However, while wrapped in a powerful story and beautiful verses of praise that begin 'Ya Devi' (Hail, Goddess), the Devi Mahatmyaham is essentially a philosophical text on the reality of the human condition and the nature of life. The frame story of the Devi Mahatmyaham concerns a dispossessed king called Suratha, who has lost his kingdom, and a merchant named Samadhi, who is betrayed by his own family. Both men have been evicted from their respective homes. Shattered by these events, they decide to renounce the world and retreat to the forest ashram of a famous sage of their era, Rishi Medhas. They meet in the forest and discover each other's unhappy stories. What troubles them most is that despite the betrayals and being kicked out of their home, they still yearn for their families. They find Rishi Medhas and pour out their woes. The rishi's teachings lead them out of their misery into a state of better understanding.

India hit Pakistan hard in Khemkaran

Abdul Hamid was among the architects of Asal Uttar victory during the 1965 war

DURING the 1965 India-Pakistan war, 4 Mountain Division was deployed at Khemkaran in Punjab's Majha region. Among 4 Division's most distinguished battalions was 4 Grenadiers. Lt Hari Ram Janu, my course-mate at the NDA, was the Forward Company Commander of this battalion's C Company. He had been in service for two years and three months. His platoon commander, 2nd Lt BK Vaid, had less than a year's service. The company was deployed on the Khemkaran-Chima road. A roadblock had been laid. In the afternoon on September 10, 1965, two jeeps followed by a tank were seen coming up the road from Khemkaran. The jeeps came to a stop near the roadblock.

The forward jeep had two stars on it; an officer stood up and shouted to the nearest Grenadiers trench that had three men and a light machine gun (LMG): "Throw down your weapons; you are surrounded!" The Bren gunner stood up in the trench and froze; he was astonished to see a senior officer standing next to the driver. 2nd Lt Vaid ordered the gunner, "Fire, open fire!" The gunner finally opened fire at the officer and the driver. Both collapsed.

The items recovered from the jeep included an officer's beret, star plates and a swallow-tailed pennant; it was presumed that Maj Gen Naseer Ahmad Khan, GOC of Pakistan's 1 Armoured Division, had been killed. This was confirmed because the rescue tank commander had shouted for the 'General' and there was a wireless intercept to the effect that 'Bade imam sahib' had been killed. The three young men in the trench were Naushad, Sulleman and Shafi. What had transpired was that the GOC, confused about the whereabouts of the Indian forces, had given his jeep to his Artillery Brigade chief Brig Ahsan Rasheed Shami, who volunteered to carry out a reconnaissance. It was he who stood up to challenge the occupants of the trench and was shot. The Brigadier's map case and an operational order marked "top secret" was also found. It was the order for Pakistan's operation to bypass both the 4 Division and 7 Division defences and then capture the Beas brigade, severing the GT road and communications to all 11 Corps formations.

When the Western Army Commander, Lt Gen Harbaksh Singh, arrived at the 4 Division HQ on September 11, the Op order and the map were shown to him. I was then instructed to take the documents back to the Command HQ. It wasn't a pleasant task as the papers were soaked in blood. Along with these were the officers' identity cards and personal effects. On reaching the Command HQ, I handed them over to the Chief of Staff and they were immediately sent to the Army HQ in New Delhi.

After detailed discussions and a late dinner, Lt Gen Harbaksh Singh, left at 2 am to take rest. We were to leave for 11 Corps at 5 am. Around 3 am, I was in my

sleep when I heard the telephone ring. I answered it and a voice asked for the Commander. I asked him to identify himself. In response, he shouted, "I'm the Chief. Who else do you think!" I said, "Sorry, Sir. I will get the Commander for you." I called up but got no response. I told my roommate, Capt Jiti Choudhry of Hodson's Horse — who had been ADC (aide-de-camp) to Gen



Daulat Singh — that I was going to the Commander's room and that when I rang up, he should put the call through. Lt Gen Harbaksh was asleep when I entered his room. I shook him awake, saying, "The Chief is on the line, Sir". Jiti put the call through. I stood by as the Commander spoke. The Army Chief said: "I have seen the Pak Op order for the dash to the Beas. I suggest you withdraw 11 Corps formations to hold a line on the Beas river." The Commander responded in the negative: "I've just come from 4 Division. The situation has stabilised. The 2nd Armoured Brigade is now under its command and 3 Cavalry is also now with 4 Division." It was decided that the Commander would postpone his visit to 11 Corps and the Chief would visit him at the Command HQ at Ambala. At 10 am the next day, the Chief arrived at Ambala. A lengthy discussion took place on various matters, but the contentious issue of the Western Command's withdrawal to the Beas, thereby giving up a large area of Majha (including Amritsar and Tarn Taran), was not taken up as the situation had changed overnight. Had a pliant Commander been in charge, a large chunk of Punjab would have been lost and the morale of the Army would have hit a new low just three years after the

Chinese debacle. Earlier, on September 8, Pakistan's 1 Armoured Division confronted the battalion at Bhura Kuhna and Asal Uttar. Around 9 am, an LMG section deployed about 20 yards from the road shouted that two tanks were approaching their position from the direction of Khem Karan and were about 200 yards away. Company Quarter Master Havildar Abdul Hamid's RCL (recoilless rifle) detachment was around 30 yards to the right of the Company HQ. Lt Janu called out to him to engage the tanks as soon as he could see them. Hamid got the lead tank with his first shot. The following two tanks were abandoned intact by their crews. At 11 am, following a severe artillery barrage, another tank attack took place. Hamid once again knocked out the lead tank. The following tanks were also abandoned. The troops attacking B Company disengaged and withdrew.

By 11:30 am, a column of 1/9 Gorkhas withdrew from Bhura Kuhna due to an enemy armoured assault. Around noon, enemy tanks entered the 4 Grenadiers' battalion defences at Chima and opened fire at close range. The RCL platoon commander, despite being wounded, ordered his detachments to engage the enemy tanks. Hamid's detachment knocked out two of the tanks that made an attempt to overrun their defences. Another attack was also repulsed, with the enemy losing two more tanks in the process. The battalion suffered six casualties. At 3 pm, a squadron of Centurion tanks of 3 Cavalry reached the spot and forced the enemy to withdraw from Bhura Kuhna. At 2:30 pm, a third attack, this time on B Company, took place and two more tanks were shot by the RCL detachment. At 9 am on September 9, a fleet of four F86s strafed the area. This was followed by tank attacks at 9:30 am, 11:30 am and 2:30 pm. Hamid accounted for two tanks, and Havildar Bir Singh of B Company two more.

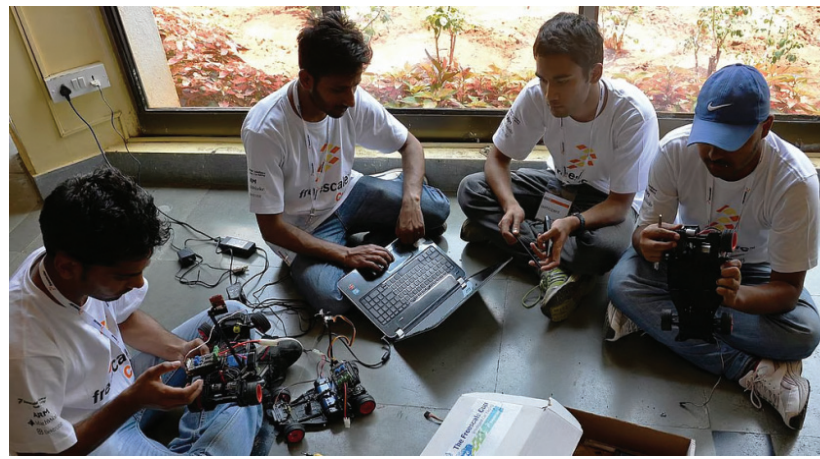
On September 10, the most important day of the Asal Uttar battle, enemy artillery started its bombardment of the Grenadiers at 6 am. One tank led the way on the road, followed by one on either side. The tanks were spotted at 200 yards, but Lt Janu ordered Hamid not to engage them till they were closer. Hamid then destroyed the leading tank, the other two being abandoned by its crew.

At 9:30 am, Hamid shot two more tanks, and while he was sighting the third, both he and the enemy fired simultaneously, hitting each other and killing both crews. 4 Grenadiers had shot 15 tanks and held its ground despite being under constant armoured attack. It received the Battle Honour 'Asal Uttar' and the Theatre Honour 'Punjab 1965'. Hamid was posthumously awarded the Param Vir Chakra for his gallantry during this battle.

Prioritise innovation, build India's future as deep tech destination

Four months after Amit Shah announced AIADMK's return to the NDA fold, the alliance seems to be rudderless

The Trump administration's proposal to impose a \$100,000 fee on H-1B visa holders, clarified later as a one-time charge, is not a minor policy tweak. It is a warning shot, exposing an uncomfortable truth. The United States no longer sees foreign talent as a strategic asset. Instead, it treats them as transactional, welcome only on its terms and when politically convenient. This move strikes at the heart of what has long powered America's tech dominance: its ability to attract the world's best minds. In 2024, Indians accounted for 71 percent of all H-1B visas. They aren't low-skilled workers; they are the engineers, researchers, and system architects behind cutting-edge platforms at Amazon, Google, Microsoft and Meta. This isn't just shortsighted. It's strategic self-harm. Yes, the H-1B system has been misused. Some companies gamed the process, underpaid workers, and exploited loopholes to the hilt. To punish the entire ecosystem, including top-tier talent that has driven US innovation for decades, is to



undercut your own future in a world increasingly defined by technological supremacy. Advertisement For India, this signals more than a diplomatic issue. It demands clarity and resolve. If America chooses to tax skills and limit opportunities, India must stop waiting for acceptance and

shift focus inward. That era is past. Now is the time to build at home. India cannot just be a talent exporter. It must become a destination for ideas, innovation, and investment. The message from Washington is clear: merit now has a price tag. India must respond even louder: opportunity has a new address.

This is not retaliation. It is reclamation. If Indian talent is pushed out, let's pull them in. Let's make India a hub where global minds build what's next. Nowhere is this urgency more pressing than in deep tech—AI, semiconductors, robotics, quantum and drone technology. These are not buzzwords; they are the foundations of global power in the 21st century. India has the raw material, talent, risk-hungry startups, and a policy intent. However, piecemeal progress won't get us there. The government's ₹10,000 crore deep tech fund is a start. What India needs is a ₹1 lakh crore deep tech mission over the next decade focused on R&D, IP, and commercialisation. The age of dependence must now give way to an era of leadership.

Sri Lanka: Year of change, many hills to climb

The administration has failed to ease the economic burden in a tangible way, and the public continues to reel under the skyrocketing cost of living. People pin hopes on a systemic overhaul

Exactly a year ago, Sri Lankans wrote political history by decisively bringing traditional two-party politics to an end by elevating a party that was not expected to rule. Their radical choice: Anura Kumara Disanayake, a neo-leftist and leader of the Janatha Vimukthi Peramuna (People's Liberation Front). For the JVP, it had not been a cakewalk. For decades, it has struggled to overcome a debilitating three percent vote, which permanently confined them to the opposition ranks. Despite radical appeal, political power had continuously eluded them until Sri Lanka hit an economic nadir in 2022. A simmering governance crisis, combined with an economic crisis, provided a potent formula for seismic political change, and Disanayake soon emerged as a beacon of hope for a nation tired of corrupt regimes and family rule. Despite his popularity, Disanayake's meteoric rise was the culmination of the 2022 'Aragalaya' protest movement, which forced the then President, Gotabaya Rajapaksa, to resign amid massive public protests. Opinion polls showed Disanayake as the country's most trusted politician at the time, as public sentiment strongly opposed the traditional ruling class—amidst allegations of largescale corruption, kleptocracy, nepotism, and a mismanaged financial crisis. Despite the political upheaval, Sri Lankans also demonstrated political prudence and patience by holding elections and by ensuring a smooth transition of power. When selecting a successor, JVP's own violent history and the responsibility of two uprisings in the South did not deter voters from electing Disanayake as their president. A year on, public expectations

remain high, and Disanayake and his government's delivery remains a mixed bag. Among the key changes expected was to reset the economic policy. However, Sri Lanka has already signed up for the IMF's formula for debt restructuring to weather the economic storm. Ultimately, Disanayake chose economic pragmatism, opting to honour the commitments made while managing domestic priorities—a difficult balancing act.

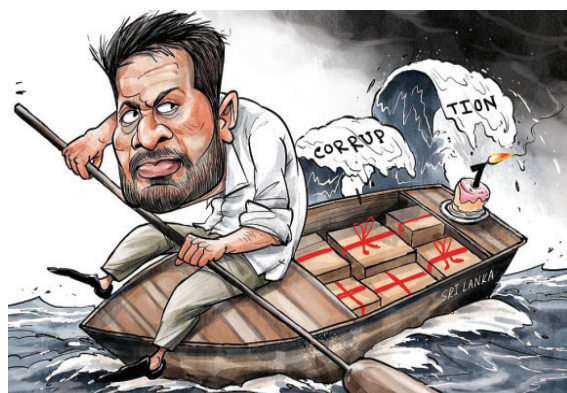
The government has begun to liquidate identified non-performing public institutions, and the spiralling cost of living is creating public irritation; however, there appears to be a dogged determination within the government to go through the painful process. This brings no praise for Disanayake, who is criticised for following a Western economic formula, once the topic of acid criticism by the JVP. There is unhappiness about the government's failure to prosecute the country's corrupt elite, another lofty election promise.

The NPP, meanwhile, claims to have taken measures to contain the budget deficit and sustain economic growth, while also trying to attract foreign direct investment. Presenting his first budget in February 2025, President Disanayake informed parliament that four major Port City projects, worth \$1.4 billion, are underway. The government also initiated public sector salary reforms to be implemented in phases through 2027, aiming to increase salaries and reduce wage disparities.

Beyond its shores, Sri Lanka is also required to deal with the competing geostrategic interests of both China and India. A member of the Official

Creditors' Committee, India's bilateral debt to Sri Lanka is approximately \$1.74 billion, whereas debt owed to China is primarily for infrastructure projects, totalling \$4.9 billion.

To win New Delhi's favour, Disanayake had to put in some work. The JVP has a publicly declared anti-India stance and had played a pivotal role in driving the Indian Peace Keeping Force (IPKF) from Sri



Lankan soil through violent protests in 1987-89. The new administration has been strategically moving forward to strengthen bilateral ties. Symbolic of this shift was the conferring of the highest civilian award, Sri Lanka Mitra Vibhushana, on visiting Indian Prime Minister Narendra Modi this April. The administration has failed to ease the economic burden in a tangible way, and the public continues to reel under the skyrocketing cost of living. Recently, the government has scrapped perks from former

presidents, a move that has generated mixed reactions, with only some claiming this would not save state funds. Beyond such optics, people pin hopes on a systemic overhaul, particularly in curbing corruption and holding the political elite accountable.

A month ago, former president Ranil Wickremesinghe was arrested by the Criminal Investigations Department for allegedly misusing state funds. It was also the first time a Sri Lankan president had been arrested on any charge. Wickremesinghe, now out on bail, marked the 79th anniversary of the United National Party (UNP) on September 20 in Colombo, where he referred to the current administration as a 'constitutional dictatorship'. For those fast losing patience with the government, Wickremesinghe's arrest was the spark they were looking for. For his part, Wickremesinghe has used it to send out a rallying call for all anti-JVP/PP forces to come together.

Then there are the unmistakable aspirations of the island's North, where the people overwhelmingly voted in favour of the NPP last November. They broke tradition and placed their faith in a southern politician to deliver justice and bring closure. There are many unresolved issues in the former conflict zones—missing persons, displacement, landlessness, and absence of justice for atrocities committed during years of war. The list is endless, and the people are waiting for the government to start moving. Disanayake will do well to remember the northern mandate and to honour that fragile faith—one that is not easily given to a southern political leader.

H1-B visa concerns drag rupee down 48 paise to record low of 88.76

MUMBAI (Agency)

Troubles continued to mount for the rupee, which has turned the weakest in Asia this year, for the second consecutive day on Tuesday slumping as much as 48 paise to hit an all-time low of 88.76 against the dollar in afternoon trade, spooked by the steep H-1B visa fee hike by the US administration over the weekend.

The previous low for the rupee, which has already lost close to 2.8% this year, was 88.47 on September 11. The rupee opened weak at 88.41, down from 88.28 in the previous, and then lost further grounds and touched an all-time intraday low of 88.76 against the greenback, a steep decline of 48 paise over the previous close. On Monday, the unit lost 12 paise from Friday's close to close at 88.28. According to forex dealers, the latest spook for the rupee is the steep hike in the new H-1B visa fee to \$1,00,000 by the US government. The move has sparked worries over remittances and potential equity outflows from the IT sector, which come as double whammy for the currency as foreign outflows have been outweighing inflows this year.

Foreign funds have already pulled out close a tad over \$12.5 billion from domestic equities this fiscal so far. Forex traders are worried that the spiraling crisis will push the rupee further down as the visa levy could result in a slowdown in remittances and curtail service exports to the US. Already merchandise exports are badly hurt by the 50% tariffs that the US has slapped on our goods. Meanwhile, the dollar index, which gauges the greenback's strength against a basket of six large currencies, was trading 0.04% higher at 97.38. The domestic equity market was also jittery for the second consecutive day with the Sensex and Nifty falling opening sharply lower on Tuesday after the bloodbath on Monday. However towards early afternoon the indices recovered largely to marginally trade in the green.

Indusind hires ex-BofA, Citi executive Viral Damania as CFO

CHENNAI (Agency)

The troubled private sector lender Indusind Bank, which witnessed the top management leaving after an accounting scam in its foreign exchange trading book hit it in March, has appointed Viral Damania, an ex-BofA India executive as its new chief financial officer (CFO), with immediate effect.

The Hinduja group-owned lender did not have a CFO since last January when Gobind Jain resigned, two months before the lender said that it found some accounting discrepancies in its derivatives portfolio and reported massive losses in the March quarter. Jain was replaced by Arun Khurana who took over the additional responsibility of CFO while being the deputy CEO. Khurana and his boss Sumant Kathapalia resigned late April. Both these executives are now under Sebi probe for alleged insider trading.

Damania, who till recently was the CFO at Bank of America India, will replace Santosh Kumar who was handling CFO charges as a special officer.

Damania is a qualified chartered accountant, company secretary, and cost & works accountant and holds an Isaca certification in information systems audit and control, the bank now helmed by Rajiv Anand as the CEO, said. Anand joined the scam hit bank end August from the larger rival Axis Bank where he was the deputy managing director. Damania has over 27 years of professional experience across banking and professional services. Till recently, he was the chief financial officer of Bank of America India, where he oversaw the bank's brokerage BofA Securities India as a non-executive director on its board. Prior to BofA, he worked with Citibank in India, Bangladesh, and Sri Lanka and also with Price Waterhouse Coopers.

India's private sector growth moderates as flash PMI eases in September

CHENNAI (Agency)

India's private sector growth slowed slightly in September, with the flash composite Purchasing Managers' Index (PMI) slipping to 61.9 from 63.2 in August. Despite the decline, the index remains comfortably above the 50-mark that separates expansion from contraction, indicating continued strength in both manufacturing and services activity. The latest data shows that both sectors expanded at a softer pace. The manufacturing PMI eased to around 58.5 from 59.3, while the services PMI declined to 61.6 from 62.9. New orders, including exports, continued to rise but at a slower rate, reflecting weaker overseas demand and heightened competition.

Job creation also lost momentum, with fewer firms reporting payroll increases. On the price front, input cost pressures eased slightly, but manufacturers continued to raise selling prices sharply, sustaining inflation risks. In contrast, services firms reported a modest cooling in output charges. Business confidence, however, improved to a seven-month high, supported by expectations of stronger domestic demand during the festive season and the recent Goods and Services Tax (GST) rate cuts. The moderation in September's PMI follows an exceptionally strong August reading, which was among the highest in nearly two decades. The latest numbers suggest that while growth remains robust, the pace is normalising. Several factors contributed to the easing momentum: Exports: International demand softened, with export order growth slowing to its weakest level in six months. Recent U.S. tariff measures added to the pressure.

EPFO pre-retirement withdrawal rules likely to be relaxed: Report

At present, EPFO members can withdraw their entire corpus only after reaching the retirement age of 58, or if they remain unemployed for more than two months.

NEW DELHI (Agency)

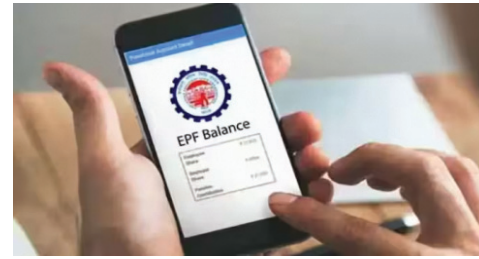
The government is considering changes to the Employees' Provident Fund Organisation (EPFO) rules to give subscribers more freedom in using their savings. According to a report by Moneycontrol, officials are working on easing withdrawal limits for purposes such as housing, marriage and education.

Two senior government officials told Moneycontrol that while there is no set timeline yet, the Centre is looking to bring in the changes within a year. "We don't want to put restrictions for the members,

it's their money they should have the freedom to manage their fund according to their needs," one official said, on the condition of anonymity.

CURRENT WITHDRAWAL RULES

At present, EPFO members can withdraw their entire corpus only after reaching the retirement age of 58, or if they remain unemployed for more than two months. Partial withdrawals are allowed, but only under specific conditions. For marriage, a member with at least seven years of service can withdraw up to 50% of their own contribution and the interest earned. This applies not only for their own marriage but also for that of a sibling or child. For housing purposes, the withdrawal limit is up to 90% of the total accumulated balance. The property must be in the name of the member, their spouse or jointly owned, and the member must have completed a minimum of three years of service. For education, a subscriber can withdraw up to 50% of their contribution with interest, but again, a minimum of seven years of service is required. This is



only applicable for post-matriculation education of children.

PROPOSED CHANGES

Moneycontrol had earlier reported in July that the government was considering a new framework under which EPFO members could be allowed to withdraw the entire corpus, or a part of it, once every 10 years. "Every 10 years, there would be some addition to the accumulated corpus of each and every EPFO's member they should decide what they need to do," an official had said. The latest discussions are part of a broader push to make EPF rules more flexible and aligned with the financial needs of members at different

stages of life. Experts believe that relaxing the rules would be particularly helpful for subscribers in the lower and middle-income brackets, who often need immediate liquidity. "The challenge for the proposed changes would be to strike the right balance by providing enough flexibility for members to use their EPF when required, while ensuring adequate safeguards so that the fund continues to serve its primary purpose of retirement security," said Manmeet Kaur, Partner at Karanjawala & Co. Aurelia Menezes, partner at King Stubb & Kasiva, Advocates and Attorneys, agreed, pointing out that while the government's aim has always been to secure retirement savings, the current restrictions do not always match real-life needs. "A more balanced framework — one that safeguards retirement corpus while still giving workers greater access to their funds — would make the EPF scheme more subscriber-friendly and responsive to real-life challenges," she said.

SIP vs SWP: How to turn your retirement corpus into reliable income

Accumulating wealth through SIPs is just the beginning of retirement planning. The real challenge is turning that corpus into a steady income. Here's how you can do it.

New Delhi (Agency)

Many investors know the power of systematic investment plans (SIPs) to build wealth over time. But as investor and stock market expert, Rajnish Mehan, points out, accumulating wealth is only one side of the retirement equation. He wrote on LinkedIn, "We all know SIPs create wealth. But how will you use that wealth when you stop earning? That's the question most investors push aside until it's too late." According to Mehan, most people focus on building a retirement corpus through SIPs but overlook how to turn that wealth into a reliable income stream. "They prepare for retirement by building a corpus, but not by designing cash flows," he says. This is where systematic withdrawal plans (SWPs) come into

play. While SIPs are about inflow and accumulation of money, SWPs are about outflow and distribution. "Without SWP, wealth is just numbers. With SWP, it becomes income," Mehan explains.

SWPs offer retirees several advantages.



They effectively convert a retirement corpus into a personal pension without locking investors into rigid insurance products promising assured returns. Withdrawals are also tax-efficient, as only gains on the withdrawn units are taxed. Additionally, SWPs allow flexibility in choosing the amount, frequency, and funds for withdrawals. Mehan adds, "It builds

discipline, prevents panic exits, and keeps money working. There are no lock-ins — you can pause, change amount or frequency, or stop anytime. It also lowers sequence-of-returns risk because near-term cash flows are de-risked." SWPs can be coordinated with other income sources such as pensions, rent, or fixed deposits, ensuring that retirees withdraw only what they need. They are also estate-friendly; remaining units stay under the investor's control and pass on to nominees. Given these advantages, Mehan predicts strong growth in SWP usage. "I won't be surprised if SWP books cross Rs 19,000 crore monthly till 2030. Because retirement is no longer about products, it's about cash flow discipline." He sums it up simply: "SIP makes us wealthy. SWP makes us free. And in financial planning, freedom is the ultimate goal."

For retirees, the key takeaway is clear: building a corpus is important, but designing a withdrawal plan is what ensures financial independence and a worry-free retirement.

Tata Advanced Systems opens India's first overseas defence manufacturing unit in Morocco

CHENNAI (Agency)

Tata Advanced Systems Ltd (TASL), the defence and aerospace arm of the Tata Group, has inaugurated India's first overseas defence manufacturing facility in Morocco. The new unit, named Tata Advanced Systems Maroc, will focus on producing wheeled armoured Platforms, strengthening India's global footprint in defence manufacturing.

Defence Minister Rajnath Singh is scheduled to formally inaugurate the facility during his official visit to Morocco. His visit will be significant as it marks the first time an Indian Defence Minister is traveling to the North African nation, underscoring growing

strategic and defence cooperation between the two countries.

Industry analysts view the move as an



important milestone for India's efforts

to expand its defence exports and build partnerships beyond its traditional markets. The Morocco unit is expected to cater not only to local requirements but also to regional and international demand for advanced armoured solutions. The development comes at a time when India has been pushing for greater self-reliance in defence while simultaneously aiming to emerge as a major exporter of military platforms and equipment. Tata Advanced Systems' overseas foray reflects this dual strategy of expanding India's defence manufacturing base and increasing global engagement.

Gold prices scale record highs amid festive demand and further Fed rate cut hopes

Investors are increasingly convinced that the US Fed will cut interest rates in upcoming meetings. Lower rates reduce the opportunity cost of holding non-yielding assets like gold.

NEW DELHI (Agency)

Gold prices surged to fresh lifetime highs on Tuesday, September 23, supported by robust festive demand in India, a weaker US dollar, and growing expectations of further interest rate cuts by the US Federal Reserve. In domestic markets, 24-carat gold climbed to around Rs 114,300 per 10 grams, while 22-carat gold was quoted near Rs 104,800. Silver also joined the rally, trading above Rs 1,40,000 per kg in some markets. Globally, spot gold rose above US\$ 3,700 per ounce during Asian trading hours, extending its record-setting momentum. There are about four key factors that drives the price rally:

1. Festive season demand in India

The start of the Navratri festival lifted jewellery buying, traditionally considered auspicious in Indian households. Seasonal purchases, coupled with advance buying for upcoming Diwali and wedding season, have kept physical demand strong despite elevated price levels.

2. Federal Reserve rate cut expectations

Global investors are increasingly convinced that the US Federal Reserve will cut interest rates in upcoming meetings. Lower rates reduce the opportunity cost of holding non-yielding assets like gold, making it more attractive as a store of value. Traders are now watching Fed Chair Jerome Powell's comments later this week for confirmation.

3. Weakness in the US dollar

A softer U.S. dollar has added momentum to bullion's rally, making gold more affordable for buyers holding other currencies and fueling investment demand worldwide.

4. Safe-haven appeal

Uncertainty around global economic

growth, ongoing geopolitical tensions, and volatile equity markets are pushing investors toward gold as a safe-haven asset. Gold's role as a hedge against



inflation and currency fluctuations is once again in focus. The markets reacted accordingly. In India, Jewelers reported strong footfalls as buyers chose to advance purchases ahead of further price increases. However, analysts caution that extremely high prices could limit bulk buying, especially among price-sensitive households. Globally, investment flows into gold ETFs and futures remain strong, with speculators increasing long positions. The global risk sentiment is supporting sustained inflows into

bullion. Riding on gold's momentum, silver prices also rallied sharply, with industrial demand and festive purchases adding to the uptrend. The broader implications of the gold price rally will reflect in various fronts. On the domestic consumption front, affordability concerns could slow momentum if prices rise much further, although cultural demand remains resilient. Gold is increasingly being seen as a hedge in portfolios in the investment front, especially as equity markets stay volatile and bond yields fall. As far as the inflation outlook is concerned, the ability of manufacturers and traders to pass on high prices will influence wider inflation trends in India, especially if the rupee weakens further. However, a strong rally in gold often pushes up imports, which could weigh on India's current account balance unless offset by strong exports elsewhere. Analysts believe that in the near term, gold prices are expected to remain firm, supported by festive season demand, a weaker US dollar, and expectations of Fed rate cuts.

Launching a startup This government scheme simplifies early funding

New Delhi (Agency)

Thinking of launching your own startup? You're not alone; many aspiring entrepreneurs face the same challenge of getting funds in the early stages. That's why the government introduced the Startup India Seed Fund Scheme in 2021, which offers seed funding through incubators to help startups build prototypes, conduct trials, and enter the market.

WHAT THE SCHEME OFFERS

Under this scheme, startups can receive up to Rs 20 lakh as a grant to test proof of concept, build prototypes, or conduct product trials. For bigger needs such as market entry, commercialisation or scaling up, funding of up to Rs 50 lakh is available in the form of debt, debt-linked instruments, or convertible debentures. The funds must be used strictly for the purpose for which they are granted, including the creation of facilities and other business requirements.

KEY FEATURES OF THE SCHEME

The Startup India Seed Fund Scheme is designed to be flexible and inclusive. It is sector-agnostic, meaning that startups from any industry can apply. There is no requirement for physical incubation, and the programme runs across India without geographical restrictions. Applications are open year-round, and startups are free to approach up to three incubators at the same time, increasing their chances of receiving support.

WHO CAN APPLY

To qualify, a startup must be incorporated not more than two years before applying. It should have a strong business idea with potential for market fit, commercialisation, and scalability. The startup is also expected to use technology in its core product, service, or business model to solve a specific problem. Preference is given to ventures working on innovative solutions in areas such as agriculture, education, energy, healthcare, mobility, defence, biotechnology, food processing, textiles, and social impact sectors.

A key condition is that the startup should not have already received more than Rs 10 lakh in monetary support from other government schemes, although allowances such as prize money, subsidised workspaces, or lab access are excluded from this limit. In addition, at least 51 percent of the startup's shareholding must be with Indian promoters at the time of application. Each startup can seek seed support in the form of both grants and debt/convertible debentures, but only once under the guidelines of the scheme.

A NATIONWIDE BOOST FOR YOUNG BUSINESSES

The scheme represents a major effort to support the startup ecosystem by easing one of the toughest challenges faced by entrepreneurs—early-stage funding.

In Devangana Kalita plea, Delhi HC allows case diaries linked to anti-CAA stir to be preserved, turns down appeal for reconstruction

Agency New Delhi.

The Delhi High Court on Monday directed a trial court to preserve the case diaries in a probe against activist Devangana Kalita by the Jafraabad police station. The matter relates to an offence lodged at the police station in 2020 during protests against the Citizenship Amendment Act (CAA). The High Court, however, refused her plea to reconstruct the diaries in its order.

The HC had first directed the preservation of the case diaries in an order dated December 2, 2024, after Kalita accused the police of antedating statements in their case diaries.

Justice Ravinder Dubeja of the HC on Monday, noted, "The case diary is not the evidence but its absence may affect the fairness of trial and therefore directions may be given to preserve it."

While rejecting the request for reconstruction, the High Court reasoned that the other pages of the police diary "which do not form part of case diary in the present case and which would have been used by the investigating officers for recording statements in various other FIRs



being investigated by them at the relevant time cannot be reconstructed as the same is being beyond the scope of Section 172 and 91 CrPC and also because petitioner (Kalita) is not entitled to have the copy of the same."

The order read, "The court is within its competence to read the police diary only for aid and for satisfying its conscience in appreciating the legal evidence available on record but not beyond. The entries in the case diaries are not

evidence nor they can be used by the accused in the court unless the case comes within the scope of Section 172(3) CrPC," Justice Dubeja recorded. CrPC Section 172 deals with maintenance of police diaries during an investigation and CrPC Section 172 (3) holds that an accused is not entitled to call for or see such case diaries, unless they are used by the police officer who made them to refresh his memory, or if the court uses them for the purpose of contradicting such a police officer.

A criminal court, under provisions of CrPC Section 172 may send for diaries and may use them not as evidence, but to aid it in an inquiry or trial. Such entries in the case diaries are usually utilised as foundation for questions to be put to the police witness and the court may, if necessary in its discretion, use the entries to contradict the police officer, who made them.

But the entries in the police diary are neither substantive nor corroborative evidence, and that they cannot be used against any other witness than against the police officer that too for the limited extent as detailed in the provision.

►The HC had first directed the preservation of the case diaries in an order dated December 2, 2024, after Kalita accused the police of antedating statements in their case diaries

4 charred to death, 1 injured as car collides with canter truck, erupts into flames in Aligarh

Agency New Delhi.

At least four people were charred to death and one person was critically injured in Uttar Pradesh's Aligarh early on Tuesday after a car collided with a canter truck and caught fire, the police said, adding that they are yet to identify the deceased.

According to officials, the accident occurred when the canter truck travelling from Aligarh towards Eta district collided with the car which was coming from the opposite direction. A few witnesses said that it appeared as though the car's tire burst, causing its driver to lose control of the vehicle, which ended up on the other side of the road, hitting the truck.

However, the police are yet to confirm what caused the accident. The car was found to be charred, while the front portion of the truck appeared to be smashed in. Cranes were used to clear the road.

Amrit Jain, Superintendent of Police, Aligarh Rural, said that at around 6.30 am, the police received information that two vehicles had collided before catching fire at Gopi Pull, which falls under the limits of the Akraabad police station. "We were initially told that a few people may have been injured in the collision," he added.

"On receiving the information, the local police, the area circle officer, Superintendent of Police (Traffic), and the chief fire officers reached the spot along with the fire rescue team and ambulances. We also called in ambulances from the National Highway Authority of India (NHAI)," the SP said.

He said they first extinguished the fire and then rescued the people trapped in the vehicles. One injured person was rushed to the JNMC Trauma Centre in Aligarh. "Four people have died in the accident. We have sent their bodies for post-mortem. We will identify them soon. Legal proceedings are underway. We have also cleared traffic in the area," SP Jain stated.

UK woman found dead in Delhi's 'White House': Cops suspect murder after autopsy

Agency New Delhi.

More than a month after an 85-year-old citizen of the United Kingdom was found dead at a house in Jantar Mantar—near the Janata Dal United's office—the Delhi Police on Monday said that they have registered an FIR under the sections of murder based on the woman's post-mortem report. According to the police, the incident happened on July 30 at Bungalow number 7 in Jantar Mantar, named the 'White house'. The woman, Pawline Crowther, was found lying on the floor of the servant quarters of the white bungalow, a police officer said. She was married to an Indian. "Blood was seen near the woman's body, found lying near the foot of a bed," the officer added.

The officer also claimed that prima facie, it seemed that the woman fell off her bed, injured herself and died of injuries. "No case was registered at that time and her body was sent for post-mortem," a senior police officer said. However, about 15 days ago, the post-mortem report of the woman was released, which didn't ascertain the cause of death to be 'natural'.

Doctors claimed that she had head injuries. Also, a police officer claimed that some of the facts of the case were found 'inconclusive' in the post-mortem report. Based on the findings, the police registered a case of murder at the Connaught Place police station. "A case has been registered and is being investigated for foul play. As of now, the family hasn't named a suspect," DCP (New Delhi) Devesh Mahla said.

The house, a police officer said, was 'allocated' to the son-in-law of the deceased, where she has been living with her son and daughter-in-law for several years. "Her daughter in law is a fashion designer and her son has a business. None of them were present at the house at the time of the incident," a police officer claimed.

Why is Delhi's sex ratio dipping? Experts explain

Agency New Delhi.

In an alarming trend, Delhi continues to see a drop in the sex ratio at birth for the fourth consecutive year—a trend that has persisted ever since the pandemic hit the Capital.

From 933 females per 1,000 males in 2020 to 920 in 2024, the latest data was revealed last week in the Annual Report on Registration of Births and Deaths in Delhi, released by the Directorate of Economics and Statistics and the Office of Chief Registrar (Births & Deaths) of the Delhi government.

According to experts, some of the factors behind the trend are violation of sex abortion laws and low fertility rate. Data also reveals the trend has been witnessed in other parts of the country too and not just in Delhi.

What is sex ratio?

Sex ratio serves as a social indicator of gender equality within a society with a ratio of 1,000 denoting an equal number of male and female births. Ratios above 1,000 indicate more females than males, while ratios

below 1,000 signify a deficit. Various studies have shown that the "natural" or expected sex ratio at birth is around 952 females per 1,000 males.

In the Capital, sex ratio at birth rose continuously for eight years from 2012 to 2020—from 886 to 933. However, after Covid hit in 2020, the



city has been seeing a persistent decline. This has come across as an unexpected phenomenon in the densely urban and prosperous national capital.

Indicating prevalence of sex-selective abortions, experts say the data points to deeper faultlines in our society.

Why the decline?

According to Srinivas Goli, Associate Professor, Demography at the

International Institute for Population Sciences, Mumbai, the sudden drop in fertility rate in Delhi can be linked to the skewed sex ratio.

A Total Fertility Rate (TFR)—the average number of children a woman is expected to have over her lifetime—of 2.1 children per woman, which ensures a broadly stable population, is called a replacement rate.

A TFR below 2.1 means a population cohort is not producing enough children to replace itself, suggesting future population decline.

India's TFR fell below the replacement rate to 2.0 by 2021, government data showed. Delhi's TFR fell to 1.2 by 2023, the lowest in the country, according to the Sample Registration System (SRS) report.

"A lower fertility rate, combined with a persistent preference for a son, has led to a skewed sex ratio. If a family is choosing to have fewer children, they still prefer sons over daughters," Goli said, adding that while surveys show a massive decline in such preferences, these numbers tell a different story.

'Must be a protector of law, not a predator': Delhi HC raps sub-inspector for misbehaving with woman advocate

Agency New Delhi.

Pulling up a Delhi Police Sub-Inspector (SI) for misbehaving with a woman advocate, her client and another lawyer, the Delhi High Court said "he is supposed to be a protector of law and not a predator".

The incident took place on Monday before proceedings were supposed to begin. The woman advocate informed the judge about the matter, following which an order was passed.

The order stated that cognizance is being taken of a complaint in relation to an "unsavoury incident which took place in the precinct of this Courtroom (just outside the entrance)".

"The Investigating Officer (IO) of the case was not only verbally abusive

with the learned counsel for the applicant as well as the complainant, but also intimidated and threatened them with dire consequences, just short of physically assaulting them,"



the order passed by Justice Arun Monga read. "When a learned senior counsel, who is leading the matter to assist this court, tried to intervene, he was meted out similar treatment," it

added. "In the premise, I am of the view that such misconduct on the part of SI Narinder cannot be countenanced under any circumstances."

"He is supposed to be a protector of law and not a predator. He cannot turn his khaki to the level of such arrogance that not only did he misbehave with officers of this Court who are doing the honourable duty of assisting the Court in discharge of justice, but also threatened them with dire consequences merely because he thinks he is above law. Be that as it may, the entire matter needs to be investigated by an officer not below the rank of the Assistant Commissioner of Police," it said in the order.

Midnight shootout in Ghaziabad: All-women police team nabs armed thief with stolen electronics

Agency New Delhi.

It was close to midnight on Sunday at the Lohiya Nagar outpost in Ghaziabad. A six-member all-women police team was carrying out a routine vehicle check when they spotted a scooter approaching the barricade on a stretch near the Meerut Road.

They signalled to the rider to stop, but he allegedly ignored them, turned sharply and lost control of his vehicle. As the officers rushed forward, he scrambled to his feet, pulled out a pistol and allegedly opened fire. The women officers ducked and then retaliated by firing back. Within moments, the man fell to the ground with a bullet wound.

By the end of the night, the Ghaziabad Police had arrested the man who they said was carrying a bunch of stolen goods and an illegal weapon—the outcome of a rare operation carried out entirely by women officers.

Police said the man was identified as Jitendra (22), a resident of Kunewali Gali in Vijaynagar. Police said he has eight cases of robbery, theft and snatching registered against him. From his possession, officers recovered a scooter stolen from Delhi, a Samsung tablet, a Samsung mobile phone, and a country-made pistol of .315 bore along with cartridges.

He was taken to MMG District Hospital for treatment.

During questioning, police said Jitendra admitted to stealing motorcycles and scooters across NCR, snatching phones and money from passersby, and selling the items at cheap prices. "He claimed the tablet and phone recovered were stolen last night near Crossings Republik, while the scooter was stolen last year from Delhi," officers said.

Later, a video captured the aftermath. Limping heavily, Jitendra was held up by two women officers, as they led him to a police van.

Mohenjodaro 'Dancing Girl' replica stolen from National Museum, university professor was behind it

Agency New Delhi.

A 45-year-old professor from a reputed university in Haryana was booked for allegedly stealing a replica of the famous Mohenjodaro "Dancing Girl" from the National Museum in Lutyens' Delhi, an official said.

The incident took place on Saturday. According to a complaint to the police by Nikhil Kumar, a clerk at the National Museum, he received a call around 4 pm from a sub-inspector (SI) posted with the Central Industrial Security Force (CISF). The SI said that a statue of the "Dancing Girl" had been stolen from Anubhav Vitika (Gallery).

"Checks were conducted immediately, and visitors were scanned. On reviewing CCTV footage, one individual was seen picking up the replica. CISF officials managed to identify the person, who was a professor, on the museum premises and nabbed him," the police said.

The CISF—which looks after security of the museum—immediately informed the local police and handed him over to them. The statue was recovered. According to police, the professor had come to Delhi for a visit but the actual reason for his stealing the statue was yet to be ascertained.

The official said that a case under sections 305 (e)(theft in a dwelling house or means of transportation or place of worship) and 317 (2) (receiving stolen property) has been registered at Kartavya Path Police station and the accused was further questioned. The 4,500 years old bronze figurine of the "Dancing Girl" was excavated in 1926. Just 10.5 cm in height, the figurine is dark and completely in the nude with the exception of multiple bangles and a necklace.

In 2018, in a similar theft from the museum, a man from Haryana stole a replica of an Olduvai hand axe, believed to have been used around 1.5 million years ago in Tanzania.

The finest jamdani saris from Bangladesh makes a pitstop in Delhi

Delhi saw its craftsmanship in a first-ever Jamdani Exposition at the National Crafts Museum. The show that closes on Tuesday, is co-curated by Indian craft and textile revivalist Chandrashekhar Bheda and Chandrashekhar Saha, one of the pioneers of Bangladesh's craft revival.

Agency New Delhi.

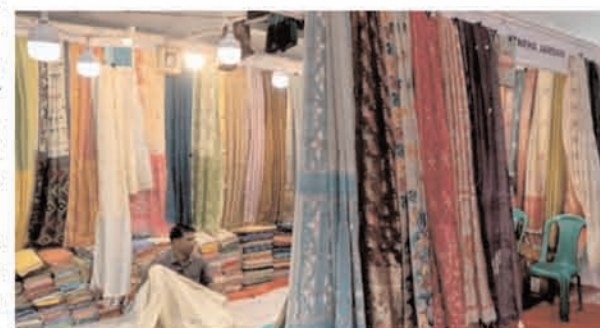
When a jamdani master weaver sits side-by-side with his apprentice on the pit loom, he isn't really talking, he is humming, singing. A song of loose threads and plaits: "Eight threads to the left and to the right, and four threads up". The number and direction keep changing as motifs appear, as flowers, paisleys, and geometrical patterns line up the translucent weave. Mathematics, it is said, holds a stern austerity, not just truth but supreme beauty, where logic, order, harmony and purity reside. In these equations lie the innovation and novelty of the jamdani, the celebrated, signature weave of Bangladesh.

Delhi saw its craftsmanship in a first-ever Jamdani Exposition at the National Crafts Museum. The show that closes on

Tuesday, is co-curated by Indian craft and textile revivalist Chandrashekhar Bheda and Chandrashekhar Saha, one of the pioneers of Bangladesh's craft revival. Brought together by the Bangladesh High Commission in New Delhi, over 100 saris by master artisans, including two rare 150-year-old pieces, tell the story of the ancient weave.

Since the 15th century, fine malmals and jamdanis have found their way on caravan routes to Iran and Uzbekistan. Patronised by the Mughals till the late 17th century, the Bangladeshi jamdani as a textile made its way into European and American markets. But with the rise of mechanised cotton and

materials, jamdani saw a decline. Between the world wars, the Partition and shifts in consumer preferences, the



textile got relegated to the back-end of history shelves.

The golden lining was the documentation of the fabric, the weave and the motifs that kept it alive, be it through

international exhibitions, books or research by scholars. Saha is one such expert, who has been working on

patterns by rural craftspeople since 1981. Both Bheda and Saha, classmates from the National Institute of Design, Ahmedabad, have made the sari the hero of this exhibition. On customised bamboo racks, saris float as "woven air", streaming down in shades of white, beige, browns, moss green, corals and blues. "We didn't want to crowd the aisle but allow the viewer space to breathe as they move from one sari to the next, feeling the fabric, its translucence, experiencing the warp and weft of the cloth, the shadows it creates on the walls," says Bheda.

NEWS BOX

Who recognises the State of Palestine, who doesn't, and why does it matter

PARIS. (Agency)

A majority of European countries now recognise the State of Palestine, following official declarations in New York on Monday by France, Belgium, Luxembourg, Malta and others, after nearly two years of war in Gaza. Here is an overview of diplomatic recognition of the state, which was unilaterally proclaimed by the Palestinian leadership in exile in 1988. Of the territory claimed by the state, Israel currently occupies the West Bank and the Gaza Strip is largely in ruins. Which countries recognise the State of Palestine? Answer: Nearly 80 percent of UN members. According to an AFP tally, at least 151 countries out of 193 UN members now recognise the State of Palestine. AFP has not obtained recent confirmation from three African countries. Six European nations -- France, Belgium, Luxembourg, Malta, Andorra and Monaco -- added their names to the list with statements at the UN on Monday. The day before, the United Kingdom and Canada became the first G7 countries to make such a recognition, with Australia and Portugal also following suit. Russia, alongside all Arab countries, almost all African and Latin American states, and most Asian nations -- including India and China -- are already on the list.

Algeria became the first country to officially recognise a Palestinian state on November 15, 1988, minutes after late Palestine Liberation Organisation leader Yasser Arafat unilaterally proclaimed an independent Palestinian state. Dozens of other countries followed in the ensuing weeks and months, and another wave of recognitions came in late 2010 and early 2011.

The Israeli offensive in Gaza, which was sparked by the Palestinian Islamist organisation Hamas's attack in Israel on October 7, 2023, has now pushed another 19 countries to recognise the state. Who does not?

Answer: at least 39 countries, including Israel, the United States and their allies. Israeli Prime Minister Benjamin Netanyahu's government completely rejects the idea of a Palestinian state. Among Asia nations, Japan, South Korea and Singapore are among those that do not recognise Palestine.

World, business leaders hope to keep momentum in fight against climate change despite US

NEW YORK. (Agency)

The US government is going in the other direction. Temperatures keep rising. More extreme weather is sweeping across the world. Yet hundreds of leaders from government and business are in New York this week to keep the fight against climate change alive. Amid fracture and despair, they are emphasizing progress and hope. More than 110 world leaders will speak at a special UN climate summit Wednesday designed to get nations to strengthen their required -- but already late -- plans to wean themselves from the coal, oil and natural gas that causes climate change. Dozens of business leaders are in the city networking in various conferences aimed at greener and cleaner energy. "We're here to power on. In the end, we either will have a livable planet or we won't," said Helen Clarkson, CEO of The Climate Group, kicking off New York City Climate Week and its more than 1,000 events. "It's an uphill struggle, but we know we don't have a choice. It's up to us to protect what we love."

But on Monday, as leaders talked about stronger national plans and reduction in fossil fuel emissions, Climate Action Tracker, an independent group of scientists who track pledges to fight climate announced that the host nation -- the United States -- had the biggest backslide in history.

"This is the most aggressive, comprehensive and consequential climate policy rollback the CAT has ever analyzed," said Niklas Höhne, a New Climate Institute scientist who helps run the tracker. In much of the rest of the world, progress

But non-US leaders in politics and business highlighted how much of the world has switched to cleaner renewable energy, such as solar and wind, mostly because of price.

"The economic case is clear," European Commission President Ursula von der Leyen told the Global Renewables Summit. She said 90% of new renewable projects generate power more cheaply than fossil fuels, and solar energy is now 41% cheaper than the lowest-cost fossil alternative. "So yes, the momentum is real."

Ukraine Braces As Russia Steps Up Drive To Seize Donetsk's Fortress Belt

Sloviansk, Ukraine. (Agency)

Fall is expected to bring another grueling test for Ukraine's armed forces as Russia intensifies its campaign to seize an eastern region, once Ukraine's industrial heartland and a territory it has long sought to conquer. Russia now controls about 70% of the Donetsk region. Ukraine's forces have been pushed back to a string of four cities that analysts have dubbed its "fortress belt," where they've repelled Moscow's efforts to seize the region for years.

But shortages of troops, supplies and chaotic management are making it increasingly hard to resist Russia's relentless pressure in the region.

As the more-than-3-year-old invasion continues despite months of US-led peace efforts, analysts and the military say the country could struggle to resist an intensified push to seize the last cities in the region under Ukrainian control. Analysts and Ukrainian officers say that Russia is unlikely to engage in protracted urban battles and avoid costly fights like the storming of Bakhmut, which dragged on for months with staggering losses on both sides. After Bakhmut and Chasiv Yar, the Russians clearly understood that large cities turn into vast cemeteries for their army, where they lose thousands upon thousands," said Col.

Trump peddles dangerous, unproven autism advice, echoing his COVID-era recklessness

Speaking alongside HHS Secretary and vaccine skeptic RFK Jr, Trump stopped short of opposing all vaccines and declaring a supposed link between autism and acetaminophen (paracetamol).

WASHINGTON. (Agency)

US President Donald Trump isn't a doctor. But he played one on TV Monday, offering copious amounts of unproven medical advice that he suggested -- often without providing evidence -- might help reduce autism rates. Trump repeatedly implored pregnant women to avoid taking the painkiller Tylenol, the bestselling form of acetaminophen. That's despite the American College of Obstetricians and Gynecologists long recommending acetaminophen as a safe option during pregnancy. He even weighed in on when children should be given painkillers.

Speaking alongside Health and Human

Services Secretary Robert F Kennedy Jr., himself a vaccine skeptic, Trump stopped short of opposing all vaccines. But he said key immunizations should be delayed, or combination shots should be given separately -- even though it has been proven that vaccines have no link to autism. "Don't let them pump your baby up with the largest pile of stuff you've ever seen in your life," he said. Trump also wildly overstated how such shots -- some of which protect against four diseases -- are given. "I think it's very bad. They're pumping, it looks like they're pumping into a horse," he said. "You have a little child. A little fragile child. And you've got a vat of 80 different vaccines, I guess, 80 different blends, and they pump it in." Dr. Trump redux The presentation recalled the early days of the coronavirus pandemic during Trump's first term, when the president stood for daily White House briefings and tossed out grossly inaccurate claims -- including famously suggesting that injecting disinfectants could help people.

"I see the disinfectant that knocks it out in a

minute, one minute. And is there a way we can do something like that by injection inside, or almost a cleaning?" Trump asked in April 2020. "As you see, it gets in the



lungs, it does a tremendous number on the lungs, so it would be interesting to check that." He later claimed he'd been joking, but those briefings soon stopped. His tone stayed serious Monday. The president suggested unspecified problems with the safe and effective MMR -- measles, mumps and rubella -- vaccine and advised parents to wait years later than now, until age 12, for hepatitis B vaccines to be given

to children.

The theme he hit harder than any other, though, was declaring a supposed link between autism and acetaminophen, which is known in most countries outside the US as paracetamol. Trump repeated, "Don't take Tylenol," with increasing urgency and eventually shouted it. Tylenol maker Kenvue disputed any link between the drug and autism and said in a statement that if pregnant mothers don't use Tylenol when in need, they could face a choice between suffering potentially dangerous fevers or using riskier painkiller alternatives. Trump, Kennedy and many of the administration's top health officials all spoke, but largely repeated known statistics rather than new research findings. Trump appeared to acknowledge that science might not be on his side, saying at one point, "I'm just making these statements from me." "I'm not making them from these doctors," the president conceded.

"Cause when they, uh, talk about, you know, different results, different studies, I talk about a lot of common sense.

Egyptian activist Alaa Abd el-Fattah released from prison after presidential pardon

WORLD. (Agency)

CAIRO: Pro-democracy Egyptian-British activist Alaa Abd el-Fattah was pardoned and released Monday after nearly 12 years in prison. "An exceptionally kind day. Alaa is free," his sister Mona Seif wrote on social media site X along with a picture of her brother smiling with his mother Laila Soueif and sister Sanaa Seif. Sanaa Seif posted on Facebook that her brother arrived at home while they were waiting for him at Wadi Natron Prison outside Cairo. Abd el-Fattah and five other prisoners had been pardoned after the National Council for Human Rights acted on behalf of their families and urged President Abdel-Fattah el-Sissi to consider their situations on humanitarian grounds. He was arrested in 2014 for participating in an unauthorized protest and allegedly assaulting a police officer and briefly released in 2019 before he was detained again later that year during a security crackdown that followed rare anti-government protests in Egypt.

An Arab Spring activist Abd el-Fattah was one of the most prominent Egyptian activists in the 2011 Arab

Spring uprising and his detention became emblematic of the fraying of Egypt's democracy.

He took part in the 2011 uprising that



toppled autocratic former President Hosni Mubarak, and later was active in protests against human rights abuses and military trials of civilians.

He was first sent to prison in 2014 for participating in an unauthorized protest and allegedly assaulting a police officer, before being released in early 2019. He was arrested again in September 2019 during a security crackdown that followed rare anti-government protests in Egypt, and after more than two years in pretrial

detention, an emergency security court sentenced him to five years for spreading false news. When his release date came up in September 2024, authorities refused to count his time in pretrial detention and ordered him held until Jan. 3, 2027. Amr Magdi, senior Middle East and North Africa researcher at Human Rights Watch, said that while celebrating Abd el-Fattah's pardon, thousands others remain behind bars because of their public views. "Hopefully his release will act as a watershed moment," providing the government with the opportunity "to end the wrongful detention of thousands of peaceful critics," Magdi said in the statement. Hunger strike and a petition The pardon came after el-Sissi's office said he had ordered a review of a petition submitted from an independent rights group earlier this month. The petition had seven names, and the status of the seventh person wasn't immediately clear. The National Council for Human Rights urged el-Sissi to consider their situations on "health and humanitarian grounds."

Trump to take aim at 'globalist institutions', make case for his foreign policy record in UN speech

NEW YORK. (Agency)

Watched by the world, US President Donald Trump returns to the United Nations on Tuesday to deliver a wide-ranging address on his second-term foreign policy achievements and lament that "globalist institutions have significantly decayed the world order," according to the White House.

World leaders will be listening closely to his remarks at the UN General Assembly as Trump has already moved quickly to diminish US support for the world body in his first eight months in office. Even in his first term, he was no fan of the flavor of multilateralism that the United Nations espouses. After his latest inauguration, he issued a first-day executive order withdrawing the US from the World Health Organization. That was followed by his move to end US participation in the UN Human Rights Council, and ordering up a review of US membership in hundreds of

intergovernmental organizations aimed at determining whether they align with the priorities of his



"America First" agenda. "There are great hopes for it, but it's not being well run, to be honest," Trump said of the UN last week. The US president's speech is typically among the most anticipated moments of the annual assembly. This one comes at one of the most volatile moments in the world body's 80-year-old history.

Global leaders are being tested by intractable wars in Gaza, Ukraine and

Sudan, uncertainty about the economic and social impact of emerging artificial intelligence technology, and anxiety about Trump's antipathy for the global body. Trump has also raised new questions about the American use of military force in his return to the White House, after ordering US airstrikes on Iranian nuclear facilities in June and a trio of strikes this month on alleged drug-smuggling boats in the Caribbean Sea. The latter strikes, including at least two fatal attacks on boats that originated from Venezuela, has raised speculation in Caracas that Trump is looking to set the stage for the ouster of Venezuelan President Nicolás Maduro. Some US lawmakers and human rights advocates say that Trump is effectively carrying out extrajudicial killings by using US forces to lethally target alleged drug smugglers instead of interdicting the suspected vessels, seizing any drugs and prosecuting the suspects in US courts.

Spain's top diplomat dismisses Israeli leader's vow of no Palestinian state, saying it will happen

UNITED NATIONS. (Agency)

Spain's top diplomat dismissed Israeli Prime Minister Benjamin Netanyahu's statement that there will never be a Palestinian state, saying Israelis will one day want to live side by side in peace with Palestinians. Foreign Minister José Manuel Albares said in an interview with The Associated Press on Monday that "a real wave" of countries have recognized the state of Palestine since Spain, Ireland and Norway did in May 2024 and an overwhelming number support a two-state solution to the nearly 80-year Israeli-Palestinian conflict. "The day that everyone will have recognized the state of Palestine, we will have to move forward," he said at the United Nations. "I'm sure that we will find someday the right people for peace on the Israel side, in the same way that we have found it in the Palestinian side" in the Palestinian Authority. Spain has been in the forefront in pressuring Israel to end the war in Gaza sparked by Hamas' surprise invasion of southern Israel on Oct. 7, 2023, criticizing "the atrocities" and "endless killing" it is committing in the

territory. Albares spoke before a UN General Assembly meeting at its annual gathering of world leaders. At the meeting, the Palestinians expected 10 recent and new countries to formally recognize the state of Palestine, adding to the list of more than 145 nations that already have. France, Luxembourg, Belgium and others did so at the meeting, even after Netanyahu reiterated his vow that there will never be a Palestinian state. Weekend recognitions came from the United Kingdom, Canada and Australia. The Spanish minister called Hamas "a terrorist organization" that doesn't want a two-state solution. "So let's put aside the extremists, and let's look for the people that want a peaceful and secure coexistence."

Spain is a vocal critic of Israeli action

Albares said Spain has staked out one of the strongest positions against Israel's actions in Gaza because "we cannot accept that the natural way for the people in the Middle East to relate is through war, through violence." Israel has the right to peace, stability, security and a state and so do the Palestinians, he said. "I don't see why they



should be condemned to be eternally a people of refugees." Albares said that it was impossible for Spain, as a democratic country that believes in human rights, to have a "normal relation with Israel" while "this endless war continues." In recent weeks, Spain ratcheted up its opposition to Israel's actions in Gaza. Spanish Prime Minister Pedro Sánchez called the war a "genocide" earlier this month when he announced plans to formalize an arms embargo and block Israel-bound fuel deliveries from passing through Spanish ports. Netanyahu accused Sánchez of a

"blatant genocidal threat." The following week, pro-Palestine protesters for whom the government expressed its support disrupted the final leg of an international cycling competition in Madrid due to the presence of a team with ties to Israel.

In the incident's aftermath, Sánchez called for Israel to be banned from all international sporting events while the war continues. A diplomatic tit-for-tat ensued in which both countries banned ministers and Israeli leaders accused the Spanish government of being "antisemitic." Albares said that in pressuring Israel to end the war in Gaza, Spain is defending the principles that underpin the creation of the United Nations after World War II -- peace, justice, human rights and human dignity. Balancing demands from Trump

On another contentious issue, the minister defended Spain's refusal to spend 5% of its gross domestic product on defense as US President Donald Trump demanded. At a NATO conference in June, the Sánchez government was the only NATO member to say it would not increase spending to that level.



NEWS BOX

Grace Harris ruled out of Women's World Cup 2025 due to calf strain

New Delhi. (Agency)

Australia's title defence at the Women's World Cup 2025 has taken a major hit as all-rounder Grace Harris has been ruled out of the tournament due to a calf strain. The tournament is all set to start on September 30 with Australia beginning their campaign on October 1 against New Zealand.

However, ahead of the event, defending champions have been struck by injury as Harris suffered a calf strain while fielding against India during the third ODI at Arun Jaitley Stadium in Delhi. It was the only appearance for Harris in the three-match series, having been added to the squad as a replacement for Annabel Sutherland, who was ruled out with hip soreness. As a result, Harris, who's played 12 ODIs in her career, has been ruled out of the upcoming World Cup. Harris has scored 16 runs from seven innings in her ODI career and has also scalped 12 wickets with best figures of 3/31. She will be replaced by Western Australia all-rounder Heather Graham. The 28-year-old



has played one ODI and five T20Is for Australia, with her last appearance at the international level coming in September, 2024 against New Zealand. Meanwhile, Australia have been suffering from injuries to multiple players ahead of the World Cup as Phoebe Litchfield missed the last two ODIs against India due to a quad issue, while Darcie Brown suffered back spasms. Sophie Molineux was unavailable for the entire series as she is still working towards gaining full fitness coming off her major knee injury. Ahead of their title defence, Australia will play a warm-up fixture against England on September 28. Australia's squad for Women's World Cup 2025: Alyssa Healy (c), Darcie Brown, Ash Gardner, Kim Garth, Heather Graham, Alana King, Phoebe Litchfield, Tahlia McGrath, Sophie Molineux, Beth Mooney, Ellyse Perry, Megan Schutt, Annabel Sutherland, Georgia Voll, Georgia Wareham

Shahid Afridi slams umpire for Fakhar Zaman dismissal vs India: They need the IPL job

New Delhi. (Agency)

Former Pakistan captain Shahid Afridi has reignited debate over umpiring standards in the Asia Cup 2025 after Fakhar Zaman's controversial dismissal during the Super 4 clash against India in Dubai on Sunday, September 21. Speaking on a panel with Samaa TV, Afridi took a cheeky dig at the officials, remarking, "They need to work in the IPL also." His comments came after several members of the Pakistan cricket fraternity expressed dissatisfaction with the third-umpire decision. The incident occurred



in the third over of Pakistan's innings after India elected to bowl first. Fakhar Zaman, who looked in touch with three early boundaries, edged an off-cutter from Hardik Pandya. Wicketkeeper Sanju Samson dived forward to claim the catch, but replays suggested the ball may have touched the ground before being gathered. After a lengthy review, the third umpire ruled the batter out, leaving Fakhar frustrated. Former batting legend Mohammad Yousuf also backed Afridi, pointing out that he had begun confidently against India's premier fast bowlers, including Jasprit Bumrah, before his innings was cut short. "He was our main player, he started off well hitting a few boundaries against world-class bowlers (Jasprit Bumrah)," Mohammad Yousuf also commented in the same panel. Pakistan skipper Salman Ali Agha voiced his doubts at the post-match press conference. "I don't really know about the decision. As far as I'm concerned, I thought it bounced. Umpires can make mistakes, and that's understandable. To me, it looked like it bounced, but I could be wrong," he said. He further suggested that Fakhar's aggressive start could have powered Pakistan to around 190 had he continued. Stay updated on Asia Cup 2025 with India Today! Get match schedules, team squads, live score, and the latest Asia Cup points table.

Asia Cup: Even on rare off-days, India outclass Pakistan, says Sanjay Manjrekar

Asia Cup 2025: Former India cricketer, Sanjay Manjrekar, believes that even when India are not at their best, their talent-stacked players somehow find a way to win, showcasing the gap in levels with Pakistan.

New Delhi. (Agency)

"Former India cricketer Sanjay Manjrekar has praised the Men in Blue for their immense depth in talent, pointing out that even on an off day, India can comfortably outclass arch-rivals Pakistan. India, led by Suryakumar Yadav, secured a four-wicket win against Pakistan in the Super 4 clash on Sunday, earlier this week. While the Indian batting lineup dominated, the bowlers had a rare off day, with Jasprit Bumrah emerging as the



most expensive bowler in the innings. Manjrekar highlighted this in a video shared on Instagram. "India wasn't at their best, clearly. I mean, just imagine Bumrah being India's most expensive bowler. He had an off

day, India dropped three catches, so they were well below their best, and despite that, they won comfortably against Pakistan," he said.

BIG GAP BETWEEN IND-PAK

From ambulance jibes to Ballon d'Or glory: Dembele's chapter from the book of panache

Ousmane Dembele's journey from ridicule at Barcelona to Ballon d'Or glory with PSG epitomizes resilience and redemption. Once mocked as injury-prone, he now stands among football's greats, silencing critics with brilliance on Europe's grandest stage.

AMSTERDAM. (Agency)

It wasn't long ago that Ousmane Dembele endured ridicule from the very fans he had long dreamed of impressing. During FC Barcelona's 2022 LaLiga title celebrations, images of him being jokingly pulled away



from the trophy by captain Marc-Andre ter Stegen went viral, while supporters mocked him with ambulance comparisons as injuries kept interrupting his career. For many, frustration outweighed his flashes of brilliance, and the 100 million euros man looked destined to be remembered more for inconsistency than talent. Fast forward to

2025, and the story could not be more different. Dembele, once the target of jeers, now stands on the summit of individual football glory, holding the Ballon d'Or. After a sensational season with Paris Saint-Germain, he lifted football's most prestigious personal honour, a triumph born out of resilience, persistence, and undeniable quality. The man who once left Camp Nou divided is now celebrated worldwide, his critics silenced by the weight of his performances. A season that resined his legacy

Dembele's resurgence came in a campaign where he evolved into PSG's heartbeat. Across 49 appearances, he delivered 33 goals and 15 assists, spearheading a historic quadruple — the UEFA Champions League, Ligue 1, Coupe de France, and Trophée des Champions. His European exploits stood out most, scoring in both the semi-final and final, including PSG's stunning 5-0 rout of Inter Milan in Munich, one of the most dominant UCL finals in history.

Rahul Chahar joins Surrey for County Championship finale against Hampshire

Indian spinner Rahul Chahar has joined Surrey for their decisive County Championship clash against Hampshire. His late inclusion bolsters Surrey's depleted spin department as they chase a fourth successive domestic title.

New Delhi. (Agency)

Surrey's push for a fourth straight County Championship crown will have an Indian flavour this week, with leg-spinner Rahul Chahar drafted into the squad for their season finale against Hampshire at the Utilita Bowl. The 26-year-old has been on Surrey's books since early September but was not called upon for the side's recent fixtures at The Oval. A string of injuries to



key spin options, however, has opened the door for him to make his first appearance in county cricket. "I'm excited to join Surrey for this week's match. I'm coming here to have an impact and help the team in their final match of the season." Chahar said. "Adding Rahul to the squad gives us another spin option at the Utilita Bowl... We had originally earmarked for Sai Kishore to return for the latter stages of the season but he unfortunately has a finger injury resulting in an operation that has meant he

was unavailable," Surrey advisor Alec Stewart said. Chahar, who plies his trade for Rajasthan in domestic cricket, has 87 wickets from 24 first-class matches to his name, with a best haul of 9 for 148. He last featured on the international stage between 2019 and 2021, playing seven white-ball games for India, and was a member of Mumbai Indians' back-to-back IPL-winning squads in 2019 and 2020. His inclusion comes at a crucial juncture for Surrey. Nottinghamshire's narrow victory over Surrey earlier this month has left Alec Stewart's side 14 points adrift at the top. To retain their title, Surrey must beat Hampshire and hope Warwickshire can deny Notts too many points at Trent Bridge. Adding spice to the contest, Chahar may find himself in a direct duel with Washington Sundar, the Indian allrounder recently signed by Hampshire for the closing stages of the competition. Surrey had originally intended to bring back R. Sai Kishore after his successful stint earlier in the season, but



the Big Bash League starts on December 14 and continues through January 25 of the following year. Despite the scheduling overlap, the expectation is that he will feature in both leagues, marking a significant new chapter in his career following his retirement from international cricket during India's recent Test tour of Australia for the Border-Gavaskar Trophy. Before both tournaments, however, Ashwin is expected to represent India at the Hong Kong Sixes scheduled from November 7 to 9. Indian players are only allowed to participate in overseas franchise leagues after retiring from all forms of cricket in India, which now makes Ashwin eligible. Ashwin has previously expressed interest in playing franchise cricket abroad. While few Indian retirees have made this transition, notable examples include Dinesh Karthik, who played for the Paarl Royals in the SA20, and Pravin Tambe, who featured across the IPL and Caribbean Premier League.

Sandesh Jhingan ready for more than spectacle as FC Goa face Cristiano Ronaldo's Al Nassr

MANCHESTER. (Agency)

It's a sentiment echoed by every Indian football fan, and one that comes straight from Sandesh Jhingan, the rock at the heart of India's defence. When FC Goa faces Cristiano Ronaldo's Al Nassr on October 22 at the Fatorda Stadium in the AFC Champions League 2, the clash will be about far more than just a result. It is a moment for Indian football to step onto the global stage, to showcase grit, panache, and the spirit of a nation eager to be seen, even in the shadow of one of the sport's most recognisable names. For India, and for FC Goa, the match is as much about representation as it is about results. And who better to marshal the backline against a world-class attack than Sandesh Jhingan, a defender whose career has spanned more than a decade, becoming synonymous with reliability, resilience, and leadership. Even for someone of his experience, the prospect of facing global stars such as Cristiano Ronaldo, Sadio Mane,

Joao Felix, and Marcelo Brozovic carries a unique blend of excitement and responsibility. Speaking candidly to India Today, Jhingan underlined the significance of this match not just for FC Goa but for Indian football itself. Facing Ronaldo's men in yellow, he said, would be nothing short of scaling Everest. "Firstly, it's very good for FC Goa to be playing at the AFC Champions League level and to be in a group with some of the best teams. Playing against top-class players like Ronaldo, Mane, and Joao Felix helps the team grow. It's exciting because chances to play against some of the greats of the sport don't come often. At the same time, our group is one of the toughest in the tournament, which makes qualifying for the next round a real challenge. But our mindset is clear, our target is to reach the knockout stage, and we'll give our best for it. For all football fans in India who follow the game passionately, this is a



major boost." The chance to test themselves against players who have conquered Europe, and to share the field with Ronaldo, a man who has won five Champions League titles and defined an era of football, is a once-in-a-lifetime opportunity. Yet Jhingan's focus remains sharp. Experience has taught him that Indian football cannot simply be content with participation. The nation needs more in

these times. "Fifteen years ago, when I was walking on the streets of Chandigarh, if someone had told me that Al Nassr and these stars would come to India, I would have been over the moon just to watch them. Now, I have the chance to face them on the field, but my objective is clear, that is going into the next round."

Injury and recovery: Jhingan's determination

Even while recovering from cheekbone surgery sustained during the CAFA Nations Cup in Tajikistan, where India finished a commendable third, Jhingan has kept his focus. The bronze medal, achieved by beating Oman, a side ranked 56 places above India, offered hope to a nation where the sport has long struggled with structural issues and fluctuating performances. Now, FC Goa has a stage to turn that spark into a flame, testing themselves against Al Nassr in front of the world.

Outfit Transition? Check. iPhone Transition? Only



Neha Kakkar

Can Pull That Off Without Breaking A Sweat

The fever of Dino Morea and Neha Kakkar's sizzling track Tu Pyaasa Hai is still going strong. The party pepping song released on September 5 continues to create waves. Fans are going gaga over its catchy tune, vibrant visuals, and sensational lyrics, and the glamorous singer herself is also grooving to it.

Taking to Instagram, the Mile Ho Tum Humko singer shared a look transformation video set to the song, serving pure main character energy just like in the music video. But what truly stole the show was her brand-new iPhone from the iPhone 17 lineup.

Neha Kakkar's Glam Look On Tu Pyaasa Hai

In the video, the singer is first seen taking a mirror selfie in a casual outfit, but it quickly transitions into a head-turning look. She donned a chic all-blue ensemble, featuring a lacy black crop top paired with high-waist, fringed blue pants adorned with sequins. The look was accessorised with chunky silver bangles and a stylish belt, perfectly complementing her curly hair and confident pose.

Fans React to Her Transition Reel

Neha's iPhone transition with her outfit instantly struck a chord with fans, who flooded the comment section with reactions. One fan wrote, "Congratulations on the new iPhone, Queenie!" Another commented, "Neha Kakkar and her iPhones!!" A third fan added, "I love this active era of hers so much," while a fourth cheekily remarked, "Neha haters be like: ab to ruk jao."

Neha Kakkar's Tu Pyaasa Hair

Presented by Tony Kakkar Productions, the much-awaited track Tu Pyaasa Hai was released on YouTube on September 5, featuring Neha Kakkar and Dino Morea. Directed by Adil Sheikh, this upbeat party number highlights the sizzling dance chemistry between the 37-year-old singer and the Bollywood star. Dino Morea can be seen romancing Neha Kakkar in the water throughout the song, exuding dreamy, royal vibes.

What truly caught fans' attention, however, was the transformation of her phone along with her outfit. While she held her old iPhone with a casual look, the phone changed as her outfit transformed.



Fans, Kajol Too Wants Big Boss 19 Star Tanya Mittal's Tailor's Number. Don't Miss Salman Khan's Reaction



Kajol recently made a vibrant appearance in the Weekend Ka Vaar episode of Salman Khan's controversial reality show Bigg Boss 19. She came to promote the second season of her recently released legal drama, The Trial, along with co-star Jisshu Sengupta. The duo engaged in a light-hearted conversation with Salman, which quickly turned into one of the most entertaining segments of the night. As Salman introduced the contestants sitting on the sofa inside the house, Jisshu couldn't help but comment on Tanya Mittal, saying, "Sir, yeh Tanya Mittal badi kamaal ki hai (Tanya Mittal is amazing). 150 bodyguards, and a huge collection of sarees."

Tanya Mittal's Sarees Catch Kajol's Eyeballs

Visibly impressed by the revelation, Kajol jumped in with a hilarious remark that left everyone laughing. The actress said, "Iska tailor ka number lena padega (Will have to take her tailor's number)."

The playful comment had everyone, including Salman, laughing. Salman added to the fun, saying, "Inka khud ka business hai, I think sarees ka. Tel ka bhi business hai (I think she has her own business of sarees and even oil)."

Salman Khan And Kajol's Dance

The episode took a nostalgic turn when Salman and Kajol recreated their iconic number Odhli Chunariya from the 1998 film Pyaar Kiya Toh Darna Kya. In a surprise twist, the duo even performed Ajay Devgn's signature steps from Singham and Son of Sardaar 2, leaving the audience cheering. Fans couldn't get enough of the Salman-Kajol chemistry, with social media abuzz over their reunion on stage.

The Trial Season 2's Star-Studded Lineup And Plot

Inspired by Robert and Michelle King's The Good Wife, the second season of The Trial delves deeper into Nayanka's struggle to establish herself in the cutthroat law world. As she navigates fresh challenges in her career and personal life, the series offers a gripping mix of courtroom drama, political twists and emotional depth that viewers definitely don't want to miss.

'I Have A Room There': Riddhima Kapoor On Her Space in Ranbir, Alia Bhatt's New Rs 250 Cr Home



Alia Bhatt and Ranbir Kapoor's luxurious new Mumbai home has reportedly been completed, and the couple, along with their daughter Raha and Ranbir's mother Neetu Kapoor, are expected to move in soon. The six-storey mansion located in Bandra's upscale Pali Hill area is reportedly valued at around Rs 250 crore. In Farah Khan's recent vlog, she playfully asked Ranbir's sister Riddhima Kapoor whether she has an entire floor to herself there. She clarified that she and her husband Bharat Sahni have one room there, while another room is reserved for Samara. She revealed that both rooms are located on Neetu Kapoor's floor, as her mother wants to keep them close.

Farah Khan gave fans a sneak-peek into Riddhima's lavish Delhi house, and the latter revealed that she has an entire floor dedicated to herself. Farah then cheekily asked Riddhima whether she also has an entire floor to herself in her family's new Rs 250 crore home in Bandra, Mumbai. "Mumbai mein jo tum logon ka ghar ban raha hai, aapke liye ek floor rakha hai ki nahi? (Do you have a floor in the house that is being constructed in Mumbai?)," asked the filmmaker-choreographer.

Riddhima smiled and clarified that she does have a room in the luxurious house, and it is going to be on her mother Neetu Kapoor's floor. "I have a room there. I am going to be on my mother's floor. So, there's one room for me and Bharat, and one for Samara too. My mom wants to keep us close."

Manwhile, last month, a video of Ranbir Kapoor and Alia Bhatt's newly constructed dream home in Bandra, Mumbai, went viral on social media. The video showcased the full front view of the celebrity couple's six-storey bungalow. Alia Bhatt strongly condemned the unauthorized filming and circulation of the video, calling it a 'clear invasion of privacy' and a serious security issue. She stated that the video was recorded and circulated without her knowledge or consent, and urged anyone who has posted it to remove it immediately. The property, which originally belonged to Ranbir's grandparents, Raj Kapoor and Krishna Raj Kapoor, was inherited by Rishi Kapoor and Neetu Kapoor, Ranbir's parents, in 1980. The house has been under construction for a few years, during which Alia, Ranbir, and their daughter Raha have often been seen visiting the site.

Karishma Tanna

On Her Navaratri 2025 Style Tips: 'I Don't Like Chubhne Wali Choli'

Today marks the first day of Navratri 2025, and across the country, people have begun celebrating the nine-day festival with devotion and joy. Celebrities are also joining in the festivities, including The Scoop actress Karishma Tanna, who shared memories of playing garba, her take on Navratri fashion, and more. Reflecting on her childhood, she said, "I grew up in South Mumbai and have very fond memories of

competitions, where our teachers were the judges and almost every year, I used to win the best dancer award."

She added, "Even after we grew up, I would go to a club where we played garba for hours. I won competitions and then went out with my group to some of our favourite food joints to eat pav bhaji and other late-night munchies. I really miss the Navratri celebrations from the good old days."

Karishma Tanna On Navaratri Fashion

When it comes to style, Karishma Tanna prioritises comfort while effortlessly making a statement with her glam looks. The Sanju actress shared, "The first and foremost thing is that my chaniya choli should be comfortable. I don't like chubhne wali designs. I have always preferred wearing chaniyas that are simple but look grand. It is simple; I have to stand out at any garba event I go to. Log mud ke dekhna chahiye bas (laughs)!"

Karishma Tanna Reveals Skincare Routine During Navaratri

If you're someone who always ends up with skin problems after festivities, take note from the actress. Karishma never negotiates with skincare rituals. She mentioned that while she has healthy and good skin, she doesn't take it for granted. She always washes her face, moisturises it and applies the required creams before sleeping.



celebrating Navratri there."

Karishma Tanna On Her Childhood Memories Of Garba

In an interview with Times of India, the actress said, "Our school had a big compound, which was decorated beautifully, and it hosted garba nights on all the days of the festival. I was always excited for this and asked my mom to dress me up in certain colour combinations and full-flared chaniyas. I was also excited about the garba

